एनएमडीसी

NMDC

NMDC 60 DIAMOND JUBILEE ECO-FRIENDLY MINER

खनिज भारती

एनएमडीसी लिमिटेड की

राजभाषा को समर्पित गृह पत्रिका

मार्च 2018

एनएमडीसी राजभाषा शील्ड का वितरण

परियोजना वर्ग में बैलाडीला लौह अयस्क खान,
किरंदुल काम्प्लेस को राजभाषा शील्ड प्रदान करते हुए श्री संदीप तुला, निदेशक (कार्मिक)

कार्यालय वर्ग में क्षेत्रीय कार्यालय, विशाखापट्टणम को
राजभाषा शील्ड प्रदान करते हुए श्री संदीप तुला, निदेशक (कार्मिक)

संपादक मंडल

संरक्षक
एन. बैजेन्द्र कुमार, आईएएस
अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक

परामर्शदाता
संदीप तुला
निदेशक (कार्मिक)

संपादक
रुद्र नाथ मिश्र
सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा)

संपादन सहयोग
जी. सुजाता, वरिष्ठ प्रबंधक
राजेश कुमार गोंड, प्रबंधक
डॉ. रजिन्दर कौर, सहायक प्रबंधक
एस.के. सनोडिया, निजी सहायक

(पत्रिका में प्रकाशित लेख, कहानियां, कविताएं एवं विचार लेखकों के अपने हैं। इनसे संपादक अथवा कंपनी का सहमत होना अनिवार्य नहीं है)

अपने लेख एवं सुझाव निम्नलिखित पते पर भेजें:
संपादक, खनिज भारती
एनएमडीसी लिमिटेड, खनिज भवन,
10-3-311/ए, कैसल हिल्स,
मसाब टैंक, हैदराबाद-500 028.
फोन: 040-23538756
ई-मेल: horb@nmdc.co.in
rnmisra@nmdc.co.in

इस अंक में

	पृष्ठ संख्या
संदेश	3
खनन का पर्यावरण पर प्रभाव एवं निराकरण वी.के. जैन	11
जिंदगी अरूमोय बिश्वास	12
इस्पात संयंत्र में कच्ची सामग्री की प्राप्ति, भंडारण एवं प्रबंधन असद उल्लाह खान	13
मानव संसाधन के नए आयाम राहुल कुमार मौर्य	15
भारत में कौशल विकास का महत्व एवं चुनौतियां: एनएमडीसी का योगदान विनोद कुमार पाण्डे	17
सांगठनिक विकास में मानव संसाधन की भूमिका संजय पाटील	19
स्वच्छ भारत सत्यप्रकाश वर्मा	21
स्वास्थ्य का महत्व और सिद्धांत एम.के.एस. खादरी	22
आकार लेता हुआ निस्प यशवंत देवांगन	23
राजभाषा पत्रकारिता और राजभाषा हिन्दी डॉ. रजिन्दर कौर	24
तंबाकू सेवन-मौत को आमंत्रण एस.के. सनोडिया	28
सपनों की उड़ान हरि कृष्ण राजपूत	31
बसंत है संगीता चंदेल	32
कृत्रिम बुद्धिमत्ता के. पार्वती श्रीनिवास	33
नवरत्न एनएमडीसी की फौलादी उड़ान ओम प्रकाश साहू	35
राजभाषा संबंधी गतिविधियां	36
सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'	46
आपके पत्र	47

निदेशक (तकनीकी) का संदेश

यह प्रसन्नता की बात है कि एनएमडीसी मुख्यालय की राजभाषा पत्रिका का प्रकाशन निर्धारित समयानुसार प्रत्येक छ:माही में हो रहा है। 'खनिज भारती' मुख्यालय एवं परियोजनाओं के मध्य सूचनाओं के आदान-प्रदान का एक सरल एवं नियमित माध्यम बन गई है। पत्रिका संगठन के कार्यकलापों, तकनीकी एवं सारगर्भित लेखों, सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों की झलकियों तथा साहित्य की अन्य विधाओं के माध्यम से कर्मचारियों की आपसी समझ को अधिक परिपक्वता एवं विस्तार प्रदान करती है। विभिन्न भाषा-भाषी क्षेत्रों में कार्यरत कर्मचारियों की भाषायी भिन्नता को राजभाषा रूपी एक सूत्र में पिरोकर 'खनिज भारती' संगठन में भाषायी सौहार्द भी स्थापित करती है।

नि:संदेह एनएमडीसी की हीरक जयंती के इस आलोक-उत्सव में पत्रिका की भूमिका अधिक महत्वपूर्ण बन जाती है और मुझे विश्वास है कि 'खनिज भारती' अपनी इस उच्चतर भूमिका को बखूबी निभाने में सफल रहेगी। मेरी कामना है कि सभी कर्मचारी नूतन उत्साह के साथ अपने अनुभव, कौशल एवं ज्ञान का सदुपयोग करते हुए एनएमडीसी को प्रगति के नए शिखर पर ले जाने में कामयाब हों।

इस अवसर पर पत्रिका के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ।

(डॉ. नरेन्द्र कुमार नंदा)

निदेशक (वाणिज्य) का संदेश

एनएमडीसी के 'हीरक जयंती' के इस उल्लासपूर्ण वातावरण में राजभाषा को समर्पित पत्रिका 'खनिज भारती' का प्रकाशन हर्ष का विषय है। संगठन में इस अवसर पर नवीन योजनाओं एवं नए संकल्पों की लहर चल रही है जो अवश्य ही एनएमडीसी को न केवल अपने लक्ष्यों को पूर्ण करने में बल्कि नए प्रतिमान स्थापित करने में भी सहायक होगी। नि:संदेह कर्मचारियों ने इस लम्बी विकास यात्रा को अपने कठिन परिश्रम एवं एकजुटता से तय किया है। भविष्य में भी यही प्रत्याशा है कि एनएमडीसी के कर्मी संगठन की प्रत्येक गतिविधि में सक्रिय रुप से अपना योगदान करें। कार्य के प्रति निष्ठा ही निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायक होती है। इस प्रतिस्पर्द्धात्मक युग में निरंतर सफल बने रहने के लिए नवोन्मेषी एवं अथक प्रयासों की सदैव आवश्यकता होती है । प्रत्येक संगठन अपने समस्त विभागों, एककों एवं परियोजनाओं के समग्र प्रयासों से उत्कर्ष की ओर बढ़ता है। इस दिशा में किए गए प्रत्येक कार्य की प्रत्यक्ष रुप से गणना चाहे हो न हो परंतु समग्रता में सभी का परिश्रम निहित होता है।

संगठन का राजभाषा विभाग संगठन की गतिविधियों को राजभाषा के माध्यम से प्रकाश में लाता है। साथ ही, प्रोत्साहन-स्वरुप आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से कर्मचारियों में नई ऊर्जा का प्रवाह करता है। पत्रिका के प्रकाशन के अवसर पर मैं राजभाषा विभाग एवं प्रकाशन से जुड़े प्रत्येक कार्मिक को शुभकामनाएँ देता हूँ।

(डॉ.टी.आर.के. राव)

निदेशक (उत्पादन) का संदेश

आज के प्रौद्योगिकी युग में सारा विश्व एक डिजिटल विश्व में बदलता जा रहा है। इस नए दौर में राजभाषा कार्यान्वयन की सार्थकता या सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि हम नई संकल्पनाओं एवं अभिव्यक्तियों को राजभाषा में किस प्रकार अपनाते हैं एवं जनभाषा में आम जनता तक किस तरह सम्प्रेषित कर सकते हैं। नये परिवेश के लिए राजभाषा हिंदी स्वयं को सक्षम बनाए और अपने दायरे का विस्तार कर तेजी से बदलती प्रौद्योगिकी से अधिकाधिक जुड़े और ऑटोमेशन की दुनिया में विस्तार कर सके। इसीलिए आज की हिन्दी का रुप वह नहीं रहा जो आज से एक-दो दशक पहले था। बदलती परिस्थितियों में इसने अपने को परिवर्तित किया है। विज्ञान-प्रौद्योगिकी से लेकर तमाम विषयों पर हिन्दी की किताबें अब उपलब्ध हैं, इण्टरनेट पर हिन्दी की वेबसाइट में बढ़ोत्तरी हो रही है, सोशल मीडिया जैसे फेस बुक, ह्वाट्स एप्प, ट्विटर आदि में हिंदी का प्रयोग बढ़ा है। हिंदी आज उत्पादक एवं उपभोक्ता दोनों वर्गों में अपनी पहुंच बना चुकी है। इसी प्रकार सरकारी संगठनों की पत्रिकाओं में भी हिंदी की प्रगति हुई है।

एनएमडीसी के प्रकाशनों में भी राजभाषा की प्रमुखता देखी जा सकती है। इसी क्रम में राजभाषा हिंदी की प्रगति के लिए समर्पित पत्रिका 'खनिज भारती' में निरंतर तकनीकी एवं वैज्ञानिक लेखों का भी समावेश किया जाता है ताकि हम इन दोनों महत्वपूर्ण क्षेत्रों में हिंदी के माध्यम से संवाद स्थापित कर सकें।

आशा है कि 'खनिज भारती' पत्रिका निगम में विभिन्न कार्यकलापों तथा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हो रहे अनुसंधान व विकास कार्यों का प्रसार करने में एक अहम भूमिका निभा सकती है।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

प्रदीप कुमार सतपथी

(प्रदीप कुमार सतपथी)

निदेशक (वित्त) का संदेश

किसी भी संगठन के आधारभूत घटकों में से संचार रुपी घटक सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। चाहे कोई भी विषय हो, भाषा ही सूचना के आदान-प्रदान का जरिया बनती है। भाषा की संप्रेषणीयता के अभाव में कई बार महत्वपूर्ण सूचनाएं भी व्यर्थ हो जाती हैं। अतः संगठन की भाषा में इतनी अधिक सम्प्रेषणीयता होनी चाहिए कि वह समस्त ज्ञानवर्धक सूचनाओं, नीतियों, नियमों, विनियमों का खुलासा भी स्पष्ट एवं सरल रुप से कर सके। साथ ही, यदि सरकारी योजनाओं को जनमानस की संवेदना का हिस्सा बनाना है तो हमें भारतीय भाषाओं और विशेष रूप से राजभाषा हिन्दी की महत्ता को समझना ही पड़ेगा। इसी के दृष्टिगत संघ सरकार द्वारा सरकारी संगठनों के सभी कार्यालयों के कार्य-व्यवहार हेतु राजभाषा के रूप में हिंदी को अपनाया गया है और हिंदी अपनी यह भूमिका बखूबी निभा रही है।

किसी भी संस्था की गृह पत्रिका उसकी सतत क्रियाशीलता, जागरुकता एवं उपलब्धियों का प्रतिबिम्ब होती है। 'खनिज भारती' पत्रिका इसका एक सटीक उदाहरण है। साथ ही पत्रिका में प्रकाशित व्यावसायिक, तकनीकी, चिकित्सापरक एवं स्वास्थ्य जागरूकता संबंधी आलेख इस बात के द्योतक हैं कि राजभाषा हिंदी के माध्यम से अभिव्यक्ति अत्यंत सरल एवं सुबोध होती है।

पत्रिका के नए अंक के प्रकाशन की शुभकामनाओं के साथ

(डी. एस. अहलूवालिया)

निदेशक (कार्मिक) का संदेश

प्रिय सहकर्मीगण,

भारत विविधताओं का देश है। यहां रीति-रिवाज, खान-पान, रहन-सहन और भाषा के स्तर पर विविधताएँ पाई जाती हैं। वास्तव में, यही विविधता हमारी संस्कृति की विशिष्ट पहचान और अनेकता में एकता का प्रतीक है। भारत में सैकड़ों भाषाएं और बोलियां हैं। इस भाषाई परिवेश में हम सभी का यह दायित्व है कि हम सबसे पहले अपनी भाषाओं को समृद्ध करने का प्रयास करें ताकि वे हमारी संस्कृति की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम बन सकें।

हमारा राष्ट्रीय लक्ष्य समावेशी विकास और समतामूलक समाज का निर्माण करना है। यह तभी संभव है जब जन उपयोगी योजनाओं का प्रचार-प्रसार अधिकतर लोगों द्वारा समझी जाने वाली भाषा में किया जाए। हिंदी देश के अधिकांश भू-भाग में बोली अथवा समझी जाती है। इसलिए वह इस कार्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

महात्मा गांधी ने कहा था ''मैं ऐसा कोई कारण नहीं समझता कि हम अपने देशवासियों के साथ अपनी भाषा में बात न करें। वास्तव में अपने लोगों के दिलों तक तो हम अपनी भाषा के द्वारा ही पहुंच सकते हैं।''

राजभाषा पत्रिका 'खनिज भारती' का उद्देश्य न केवल राजभाषा का प्रचार-प्रसार करना है बल्कि एनएमडीसी की विभिन्न योजनाओं एवं इसके क्रियाकलापों की जानकारी अधिकाधिक लोगों तक पहुंचाना है। मैं पत्रिका के नए अंक के लिए शुभकामनाएं देता हूं एवं आशा करता हूं कि निश्चित रूप से पत्रिका में रचनाओं एवं रचनाकारों का वैविध्य इसकी प्रगति के साथ देखने को मिलेगा।

(संदीप तुला)

मुख्य सतर्कता अधिकारी का संदेश

भारत विविध भाषाओं एवं बोलियों का देश है। हमारा दायित्व है कि हम अपने देश की इन सभी भाषाओं की समृद्धि का साधन बने।

आज कार्यालय के अधिकांश कार्य कंप्यूटर, ईमेल, मोबाईल पर हो रहे हैं। गो-ग्रीन का जमाना है। मोबाईल फोन चलता फिरता कंप्यूटर है। कहीं पर कभी भी कार्यालयीन कार्य कर सकते हैं। कुछ गंभीर कार्यों को छोड़कर, सभी कार्य ईमेल, मोबाईल पर हो जाते हैं। इन पर हिंदी में कार्य करने की सुविधाएं मौजूद हैं। लेकिन इनकी आदत नहीं होने या जानकारी नहीं होने के कारण हिंदी छूट जाती है। ऐसे में खनिज भारती जानकारी के आदान-प्रदान का एक सशक्त माध्यम बन सकती है। अत: राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी अपनी समस्याएं, समाधान, सुझाव, नए प्रयोग आदि पत्रिका के माध्यम से साझा करें। विचारों के आदान-प्रदान से समस्याओं के विश्लेषण एवं सम्यक समाधान की कोशिश करें।

किसी भी संगठन के कार्य को राजभाषा पत्रिका के माध्यम से अभिव्यक्त करना और नए विचारों एवं नई सोच को प्रकाश में लाना बेहद महत्वपूर्ण कार्य है। राजभाषा पत्रिका 'खनिज भारती' तकनीकी लेखों एवं अन्य साहित्यिक विधाओं के माध्यम से कार्य कुशलता एवं ज्ञान का प्रसार कर रही है। एनएमडीसी में इस पत्रिका ने एक संवाद सेतु की तरह कार्य करने का प्रयास किया है। मैं हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं कि यह पत्रिका राजभाषा के प्रसार-प्रचार में पूर्ण रुप से सफल हो।

(के. विद्यासागर)

संपादक की कलम से...

साथियो,

किसी भी भाषा में मौलिक लेखन उस क्षेत्र के ज्ञान-विज्ञान पर चिंतन एवं अनुसंधान को विकसित करता है। नए विचारों, नई संकल्पनाओं तथा नई खोजों के लिए नए शब्दों का निर्माण होता है और इससे भाषा का भी विकास होता है। हम अपने देश में वैज्ञानिक एवं तकनीकी साहित्य के अनुवाद पर अधिक निर्भर हैं। परिणामस्वरुप अनुवाद आने तक नई-नई संकल्पनाएं आ जाती हैं और अनूदित सामग्री पुरानी पड़ जाती है। अनुवाद पर आश्रित होने से मौलिक लेखन को प्रोत्साहन नहीं मिल पाता है। अत: अंग्रेजी का अनुगामी न होकर मौलिक चिंतन के साथ बढ़ना होगा ताकि हम ज्ञान-विज्ञान के साथ भाषा के क्षेत्र में भी सदैव अग्रिम पंक्ति में रहें। यहां ऋग्वेद की ऋचा का भावांतर उल्लेखनीय है:

हम हैं दिव्यशक्ति के स्वामी,
बने अग्रणी नहीं अनुगामी
अपने ही अनुभव के बल पर,
नए सृजन आधार बनाएँ।

खनिज भारती के माध्यम से हमने इस नए सृजन की कल्पना की है। इस कल्पना को सार्थक करने में एनएमडीसी समुच्चय पूर्ण रुप से सक्षम है जो इस अंक में प्रकाशित मौलिक रचनाओं से स्वत: स्पष्ट हो जाता है।

पत्रिका के प्रकाशन में सर्वोच्च प्रबंधन के मार्गदर्शन एवं प्रेरक संदेश तथा रचनाकारों के रचनात्मक सहयोग के प्रति संपादक मंडल अपनी कृतज्ञता व्यक्त करता है। सुधी पाठकों का भी हृदय से आभार, जिनके बहुमूल्य सुझावों ने पत्रिका को सम्बल प्रदान किया है। आशा है कि आपका स्नेह पत्रिका को सदैव प्राप्त होता रहेगा।

(रुद्रनाथ मिश्र)

खनन का पर्यावरण पर प्रभाव एवं निराकरण

वी.के. जैन
सहायक महाप्रबन्धक (यांत्रिकी)
एनएमडीसी, हीरा खनन परियोजना, पन्ना

मानव जाति के विकास में खनन के योगदान को नजर अंदाज नहीं किया जा सकता, परन्तु खनन उद्योगों से हो रहा पर्यावरण प्रदूषण विश्व व्यापी चिंता का विषय है। समय रहते यदि हम पर्यावरण संरक्षण का संकल्प न करें, तो यह हमारे लिए विध्वंसकारी साबित होगा। विगत दशक में संस्थागत लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए बेहतर पर्यावरण संरक्षण हेतु बड़े कदम उठाए जा रहे हैं। इस कारण नई एवं पुरानी खानों में उत्खनन हेतु उत्कृष्ट पर्यावरण हितैषी योजनाओं का क्रियान्वयन किया जा रहा है।

खनन हेतु निम्नांकित मुद्दों पर सावधानी अत्यंत महत्वपूर्ण है:

1) जनसमुदाय की सुरक्षा एवं स्वास्थ्य पर ध्यान,

2) वातावरण एवं पर्यावरण में हो रही क्षति पर नियंत्रण,

3) खनन क्षेत्र के दोहन के पश्चात उसे हरा आवरण प्रदान करना

4) सामाजिक एवं आर्थिक लाभ हेतु दीर्घावधि की खनन योजना एवं क्रिया-कलापों का सृजन।

खनन क्षेत्रों में निम्नलिखित तथ्यों पर जोर देने की आवश्यकता है:

1) मौलिक स्थिरता-भवन निर्माण, कार्य क्षेत्र, खदानों में ढलान इत्यादि स्थिर होने चाहिए, जिससे जन-सामान्य की सुरक्षा एवं स्वास्थ्य पर प्रतिकूल असर न पड़े।

2) भू-रासायनिक स्थिरता - खनिज, धातु एवं अपव्ययी पदार्थ स्थिर हों, ताकि वे जल-स्त्रोतों से सीधे मिश्रित न हो सकें।

3) खनन क्षेत्र का उपयोग-बंद खदानों में खनन से पूर्व की स्थिति निर्मित करने का प्रयास किया जाए।

4) सतत विकास - सामाजिक एवं आर्थिक लाभ की दृष्टि से खानों में नवीनीकरण के कार्य करने चाहिए।

खनन एवं पर्यावरण:

खनन उद्योग जगत को अपनी कार्य प्रणाली के अनुसार पर्यावरण संबंधी कर्तव्यों का निर्वहन करना होता है। पर्यावरण सुरक्षा से संबंधित हमारी जागरुकता ही हमें पर्यावरण सुरक्षा हेतु सचेत करती है। खनन उद्योग की कार्यप्रणाली में सम्मिलित अन्वेषण कार्यों में आधारभूत परिवर्तनों के बल पर ही खनन उद्योग में जिम्मेदारी के साथ पर्यावरण में सतत सुधार एवं प्रबंधन का सामंजस्य बनाया जा सकता है।

पर्यावरण संतुलन एवं सुरक्षा मानक:

समस्त विश्व में खनन से होनेवाले लाभ की गणना नहीं की जा सकती । पृथ्वी में जीवन के लिए धातुओं के महत्व को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है, किन्तु खनन से पर्यावरण को होनेवाली क्षति आज एक ज्वलंत चर्चा का विषय है। नियंत्रण के साथ लाभकारी खनन गतिविधियों से स्वच्छ पर्यावरण की परिकल्पना सुनिश्चित होती है। ऐसे नियंत्रक मानकों के साथ खनन कार्य करना यद्यपि एक बड़ी चुनौती है, किन्तु जीवन में परस्पर सामंजस्य एवं समस्त प्राणी जगत में मानव जीवन का अनमोल होना, हमें नियंत्रित स्थितियों में खनन के प्रति जागरुक करता है। पर्यावरण के सामाजिक ताने-बाने से सुसज्जित नीति, नियम एवं नियंत्रक मानक सरकार द्वारा तय किए गए पैमाने के अंतर्गत होने चाहिए। अत: सरकार द्वारा गठित नियंत्रक इकाई का कार्य पर्यावरण संबंधी नियंत्रक मानकों को कठोरता से लागू करना एवं समय-समय पर मूल्यांकन करना है। अंतर्राष्ट्रीय मानक संस्थान द्वारा निर्धारित मानदंडों से उद्योग एवं पर्यावरण सामंजस्य बनाया जा सकेगा। इस दिशा में अंतर्राष्ट्रीय मानक संस्थान द्वारा आई.एम.एस. सिरीज का श्रीगणेश किया गया है।

ये मानक उन समस्त उद्योगों पर लागू होते हैं, जो निम्नलिखित तथ्यों का समर्थन करते हैं:

1) पर्यावरण प्रबंधन-तंत्र की स्थापना, सुधार एवं नियंत्रण

2) पर्यावरण नीतियों के अनुरूप या अनुकूल कार्यों की सुनिश्चितता

3) किसी प्रमाणिक संस्था से पर्यावरण संबंधित प्रमाणन प्राप्त करना

4) स्वयं की भागीदारी संबंधित प्रमाणन देना

5) सुधार से संबंधित प्रदर्शन इत्यादि।

पर्यावरण मानकों के अनुरूप खनन:

पर्यावरण मानकों के अनुरूप खनन के लिए निम्नलिखित सृजनात्मक कार्यों की आवश्यकता है:

1) सर्वप्रथम खनन कार्यों में सम्मिलित प्रक्रियाओं में उपयोग में आनेवाले जल का उपयोग के उपरांत शुद्धि करण एवं परिशोधन

2) वातावरण में उत्पन्न धूल कणों की रोकथाम हेतु वृहत वृक्षारोपण एवं धूल उत्पन्न करने वाले स्थानों पर समय-समय पर जल का छिड़काव

3) वातावरण में छोड़े जानेवाले रासायनिक एवं औद्योगिक रिसाव, तेल, अवशेषों की सफाई हेतु निकासी परिशोधन संयंत्र की स्थापना

4) खनन, खनिज परिशोधन एवं सीवेज से निकलने वाले दूषित जल का शुद्धिकरण एवं उपचार

5) नागरिक परिक्षेत्रों के भीतर पक्की सड़कों का निर्माण

6) संतुलित एवं संयमित खनन तकनीक का उपयोग तथा कार्यान्वयन

7) ऊर्जा में नवीनतम साधनों का बड़े पैमाने पर उपयोग तथा कार्यान्वयन

8) ईंधन की खपत को कम कर उत्पादकता बढ़ाने का प्रयास तथा

9) खनन कार्यों में सम्मिलित लोगों में जागरूकता का प्रसार एवं प्रचार।

जिंदगी

अरूमोय बिश्वास,
उप प्राचार्य
बीआईओपी सीनि.सेके.स्कूल, किरंदुल कॉम्प्लेक्स

धुन एक सी बजा रखी है जिंदगी ने मेरे कानों में,
मिलता कहां है चैन पत्थरों के इन मकानों में।

बहुत कोशिश करते हैं जो खुद का वजूद बनाने में,
हो जाते हैं दूर अपनों से नजर आते है बेगानों में।

क्यों रहता है तू निराश अपनी ही उलझनों में,
झोंक दे सब ताकत अपनी करने फतह मैदानों को।

औरों की खातिर कुछ कर गुजर
कर ले नाम अपना शामिल जमाने के खैरख्वाहों में।

ऐ इंसान खुद को कर दे मालिक के हवाले
वरन क्या असर आरती और नमाजों में,

बसर करनी है जिन्दगी किसी की सेवा में
वर्ना क्या फर्क है तुझमें और शैतानों में।

इस्पात संयंत्र में कच्ची सामग्री की प्राप्ति, भंडारण एवं प्रबंधन

असद उल्लाह खान
प्रबन्धक (सामग्री एवं निविदा)
एनएमडीसी, निस्प, नगरनार

कच्ची सामग्री का कुशल उपयोग एवं प्रबंधन अति महत्वपूर्ण होता है। इस्पात उद्योग उन्नत उत्पादन तकनीकों का उपयोग करता है, जिससे उत्पादन में वृद्धि के साथ-साथ ऊर्जा की आवश्यकताओं को कम किया जा सकता है।

वैश्विक स्तर पर उत्पादित प्रति टन कच्चे इस्पात के लिए 20 गीगा जूल ऊर्जा इस्तेमाल होती है। लगातार अनुसंधान और विकास द्वारा उन्नत इस्पात संयन्त्रों में प्रति टन ऊर्जा की खपत 60% तक कम हो गई है।

वैश्विक इस्पात उद्योग 1.6 अरब टन कच्चे स्टील का उत्पादन करने के लिए एक साल में 2 अरब टन लौह अयस्क, 1 अरब टन धातुकर्म कोयला और 520 मिलियन टन पुनर्नवीनीकरण स्टील (स्क्रैप) का उपयोग करता है।

लौह अयस्क और धातुकर्म कोयला मुख्य रूप से लोहे के निर्माण की ब्लास्ट फर्नेस प्रक्रिया में उपयोग किए जाते हैं। इस प्रक्रिया में कोकिंग कोल को कोक में बदल दिया जाता है और इसका इस्तेमाल ब्लास्ट फर्नेस में मुख्य ईंधन के रूप में किया जाता है।

लौह अयस्क पृथ्वी की सतह पर एक सामान्य खनिज है। भारत में खुली खदानों/खानों से अधिकतर लौह अयस्क निकाला जाता है जिसे रेल द्वारा नजदीकी इस्पात उद्योग आधारित शहरों/बंदरगाहों में ले जाया जाता है और अन्य देशों के इस्पात संयंत्रों को भेज दिया जाता है।

लौह अयस्क और धातुकर्म कोयला मुख्य रूप से केप आकार के जहाजों से प्रेषित /आयातित किए जाते हैं। ये विशाल वाहक 140,000 टन या अधिक का कार्गो रख सकते हैं।

इस्पात संयंत्र में कच्ची सामग्रियां:- एनएमडीसी लौह एवं इस्पात संयंत्र, नगरनार में प्रतिवर्ष 30 लाख टन इस्पात (कच्चा लोहा और हॉट रोल्ड उत्पाद) के उत्पादन एवं निर्माण हेतु प्रतिवर्ष लगभग 100 लाख टन और प्रति दिन 32000 टन कच्ची सामग्री की आवश्यकता होगी। इस्पात संयंत्र में कच्ची सामग्री की प्राप्ति , भंडारण एवं कच्चे माल का प्रबंधन एक चुनौती भरा कार्य है जिसमें न केवल पूंजी का भारी निवेश होता है बल्कि इनवेंटरी में भी वृद्धि होने के साथ साथ संयंत्र परिसर में सीमित भंडारण क्षेत्र होने के कारण निरंतर उत्पादन और कच्चे माल के भंडारण में सामंजस्य भी बनाए रखना होगा। कच्ची सामग्रियों के प्रेषण एवं परिवहन का तंत्र समस्त संयंत्र में मकड़ी के जाल सा फैला रहता है। इससे संयंत्र को उत्पादन के लिए आवश्यक आक्सीजन प्राप्त होती है। इसे संयंत्र की जीवन रेखा भी कहा जाता है। एनएमडीसी की स्वयं की लौह अयस्क खानें हैं जो इस्पात निर्माण के लिए महत्वपूर्ण कच्ची सामग्री प्रदान करती हैं। एनएमडीसी को स्वयं की लौह अयस्क खदानों से लदान, भंडारण, प्रेषण और परिवहन का विस्तृत एवं विशाल अनुभव है।

विभिन्न कच्ची सामग्रियों का विवरण :- लोहा और इस्पात उद्योग में लौह अयस्क सबसे महत्वपूर्ण और बुनियादी कच्चा माल है। कच्चे लोहे (पिग आयरन) का एक टन बनाने के लिए लगभग 1.5 टन लौह अयस्क की आवश्यकता होती है। लौह इस्पात उद्योग में महत्वपूर्ण ईंधन कोयला और कोक हैं। आधुनिक वात्या -भट्ठी में एक टन कच्चे लोहे का उत्पादन करने के लिए लगभग 450 टन कोक का उपयोग किया जाता है। लौह और इस्पात उद्योग के लिए पानी भी एक महत्वपूर्ण कच्चा माल है। यह हाइड्रोलिक मशीनरी संचालित करने और सीवेज निपटान के लिए कोयला भट्टी (कोक ओवेन) के दरवाजे पर भाप बनाने के लिए, कोक को बुझाने के लिए एवं मुख्य रूप से वात्या भट्टियों को शांत करने के लिए उपयोग किया जाता है। लोहा और इस्पात उद्योग के लिए वायु एक अन्य महत्वपूर्ण आवश्यकता है। एक टन स्टील बनाने के लिए लगभग 4 टन हवा (वायु) की आवश्यकता होती है। पिघले लौह अयस्क से अशुद्धियों को निकालने के लिए ब्लास्ट-फर्नेस में चूना पत्थर और डोलोमाइट फ्लक्स का उपयोग किया जाता है। लौह अयस्क

को गलाने के लिए भट्टियों को बांधने के लिए रीफ्रैक्टरीज का उपयोग किया जाता है। सिलिका या रेत का उपयोग मोल्डिंग के लिए किया जाता है। विभिन्न ग्रेड के स्टील के उत्पादन के लिए विभिन्न गैर-लौह धातु एल्यूमीनियम, क्रोमियम, कोबाल्ट, तांबा, सीसा, मैंगनीज, मोलिब्डेनम, निकल, टिन, टंगस्टन, जस्ता, वैनेडियम आदि फेरो-अलॉयज का उपयोग किया जाता है। इन सभी फैरो-मिश्र धातुओं में से व्यापक रूप से मैंगनीज का उपयोग किया जाता है। लौह और इस्पात उद्योग के उत्पादन के लिए बिजली की आवश्यकता होती है। लौह स्क्रैप का उपयोग लौह गलन शाला में व्यापक रूप से किया जाता है।

सामग्री की अनलोडिंग एवं भंडारण सुविधा :- लौह उत्पादन एक सतत एवं निरंतर प्रक्रिया है। एनएमडीसी लौह एवं इस्पात संयंत्र, नगरनार में उत्पादन को निर्बाध गति से बनाए रखने के लिए संयंत्र परिसर में कच्ची सामग्री प्रबंधन विभाग के अंतर्गत विभिन्न विशालकाय मशीनों को स्थापित किया गया है :-

20 टिपलिंग / घंटा की क्षमता से चलायमान 3 विशाल वेगन टिपलर (रोटा साइड टाइप) स्टेशन परिसर की स्थापना की गई है जिसमें साइड आर्म चार्जर के द्वारा वेगन को टिपलिंग स्टेशन से नियंत्रित किया जायेगा ।

कच्ची सामग्री (कोल, चूना पत्थर , लौह अयस्क इत्यादि) वेगन टिपलर के नीचे समायोजित हापर में गिराई एवं संग्रहीत की जाएगी। हापर से बेल्ट फीडर द्वारा कनवेयर बेल्ट के द्वारा सामग्री की आपूर्ति अन्यत्र भंडारण स्थलों में की जाएगी।

कन्वेयर बेल्ट द्वारा कच्ची सामग्रियां स्टेकर रेक्लाइमर द्वारा नियत स्थानों में स्टेकर रेक्लाइमर के दोनों तरफ संग्रहीत की जाएगी जिसे संग्रहण क्षेत्र कहते हैं। इस संग्रहण क्षेत्र में 7 दिन तक उत्पादन की क्षमता का लौह अयस्क और फ्लक्स एवं 21 दिन तक उत्पादन क्षमता का कोल भंडारित किया जा सकता है ।

इस संग्रहण कार्य हेतु कुल 9 संग्रहण बेड बनाए गए हैं जिसमें प्रत्येक बेड की लंबाई लगभग 35 मीटर एवं चौड़ाई लगभग 30 मीटर है। इनमें से 4 बेड कोकिंग कोल के लिए , 1 बेड लौह अयस्क चूर्ण के लिए , 1 बेड कोल चूर्ण के लिए एवं अन्य 3 बेड लौह अयस्क एवं फ्लक्स के लिए निर्धारित किए गए हैं ।

1500 टन / घंटा की क्षमता के 5 स्टेकर रिक्लाइमर की स्थापना की गई है जिसके द्वारा समस्त सामग्रियों का संग्रहण नियत स्थान में किया जाएगा और आवश्यकता अनुसार संबधित विभागों में भेजा जाएगा ।

दो रेक्लाइमरों द्वारा कन्वेयर बेल्ट की एक श्रृंखला से प्राप्त कोल को कोक ओवेन संयंत्र के स्टॉक हाउस तक पहुँचाया जाएगा। इसमें जंकसन हाउस12,13,14 एवं 34 का इस्तेमाल होगा

जंकशन हाउस 17,18 एवं 19 के माध्यम से सीडीआई (कोल डस्ट इंजेक्सन) कोल को सीडीआई संयंत्र तक पहुँचाया जाएगा ।

लौह अयस्क लंप (वात्या भट्टी श्रेणी) को जंक्शन हाउस 15,16,17,18 एवं 20 के द्वारा वात्या भट्टी स्टॉक हाउस तक प्रेषण जंकशन हाउस 18,29,24,39 एवं 41 से कन्वेयर बेल्ट प्रणाली के माध्यम से लौह अयस्क सीधे लौह गलन शाला (एसएमएस) तक प्रेषित किया जाएगा।

सिंटर प्लांट के लिए जंकशन हाउस 20 एवं 21 एवं लाईम और डोलोमाइट प्लांट के लिए जंकशन हाउस 21,29,22,23,24 एवं 25 के माध्यम से कच्चे माल का प्रेषण कन्वेयर बेल्ट प्रणाली के द्वारा किया जाएगा ।

कोक ओवेन से निकले कोक को कन्वेयर बेल्ट के द्वारा वात्या भट्टी स्टॉक हाउस तक जंकसन हाउस 23,24 एवं 26 द्वारा प्रेषित किया जाएगा ।

जंकशन हाउस 22, 23,24 एवं 26 द्वारा सिंटर प्लांट से निकला सिंटर वात्या भट्टी स्टॉक हाउस तक प्रेषित किया जाएगा

जंकशन हाउस 27 एवं 28 द्वारा लाईम और डोलोमाइट प्लांट कीलन से निकली सामग्री लौह गलन शाला (एसएमएस) तक प्रेषित की जाएगी।

जंकशन हाउस 30, 31, 32 एवं 33 द्वारा स्लेग ग्रेनुलेसन प्लांट से निकली ग्रेनुलेटेड स्लेग को नियत भंडारण क्षेत्र तक प्रेषित किया जाएगा।

लौह गलन शाला (एसएमएस) के नजदीक स्थित भंडारगृह में डीआरआई, फेरो मैगनीज, फेरो सिलिकन, सिलिकों मैगनीज, अल्युमीनियम, फ्लोरस्पार एवं अन्य गैर लौह मिश्र धातु सामग्री को सीधे माल वाहक वाहनों के माध्यम से संग्रहीत किया जाएगा ।

मानव संसाधन के नए आयाम

राहुल कुमार मौर्य
प्रबंधक (कार्मिक)
एनएमडीसी, निस्प, नगरनार

मानव संसाधन विकास का तात्पर्य उस प्रक्रिया से है जो किसी संगठन में कार्यरत मानव शक्ति के ज्ञान, कौशल, शिक्षा योग्यता एवं निहित आंतरिक क्षमताओं को उजागर कर व्यापक एवं विस्तृत पद्धति से विकसित करती है। प्रत्येक संगठन में मानव संसाधन विकास का महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि यह कार्मिकों की प्रतिभा को पहचान कर उन्हें और अधिक दक्ष बनाता है, जिससे कार्यकुशला में वृद्धि होती है एवं आर्थिक विकास में योगदान मिलता है। संगठन की आर्थिक स्थिति को मानव संसाधन कैसे सुदृढ़ बनाता है इसे हम निम्न रुप में देख सकते हैं:

मानव संसाधन वह अवधारणा है, जो जनसंख्या को अर्थव्यवस्था पर दायित्व नहीं बल्कि उस से अधिक परिसंपत्ति के रूप में देखती है। शिक्षा, प्रशिक्षण और चिकित्सा सेवाओं में निवेश के परिणामस्वरुप जनसंख्या मानव संसाधन के रुप में बदल जाती है। मानव संसाधन उत्पादन में प्रयुक्त हो सकने वाली पूँजी है । यह मानव पूँजी कौशल और उनमें निहित उत्पादन के ज्ञान का भंडार है । यह प्रतिभाशाली और काम पर लगे हुए लोगों और संगठनात्मक सफलता के बीच की कड़ी को पहचानने का सूत्र है। यह उद्योग/संगठनात्मक मनोविज्ञान और सिद्धांत प्रणाली संबंधित अवधारणाओं से संबद्ध है।

मानव संसाधन विकास एक संरचना है, जो संगठन के या राष्ट्र के लक्ष्यों को संतोषजनक ढंग से पूरा करने के साथ व्यक्ति विशेष के विकास की अनुमति देती है। व्यक्ति के विकास से व्यक्ति विशेष तथा संगठन दोनों के साथ राष्ट्र और उसके नागरिकों को लाभ होगा। नैगम दृष्टिकोण के अनुसार मानव संसाधन ढांचा कर्मचारी को उद्योग की संपत्ति की तरह देखता है, जिसकी कीमत विकास के साथ बढ़ती है। इसका प्राथमिक ध्यान विस्तार तथा कर्मचारी का विकास है। यह व्यक्ति की क्षमता और कौशल विकसित करने पर जोर देता है।

आर्थिक विकास में मानव संसाधन की भूमिका का संक्षेप वर्णन निम्नानुसार है:

1. संसाधनों का कुशल उपयोग
2. आविष्कार
3. राष्ट्रीय सुरक्षा
4. पूंजी निर्माण।
5. उत्पाद और खपत
6. परिवहन और संचार का विकास
7. कौशल का विकास
8. सभ्य समाज का निर्माण
9. श्रम शक्ति की आपूर्ति
10. कुशल प्रशासन

मानव संसाधन के भौगोलिक आयाम: नवीकरण संसाधन अथवा नव्य संसाधन वे संसाधन हैं जिनके भण्डार में प्राकृतिक/पारिस्थितिक प्रक्रियाओं द्वारा पुर्नस्थापन होता रहता है। हालांकि मानव द्वारा ऐसे संसाधनों का दोहन अगर उनके पुर्नस्थापन की दर से अधिक तेजी से हो तो फिर ये नवीकरण संसाधन नहीं रह जाते और इनका क्षय होने लगता है। ऐसे संसाधनों में ज्यादातर जैव संसाधन आते हैं, जिनमें जैविक प्रक्रमों द्वारा पुन:स्थापन होता रहता है। उदाहारण के लिए एक वन क्षेत्र से वनोपजों का मानव द्वारा उपयोग।

मानव संसाधन के सामाजिक आयाम: सूचना प्रौद्योगिकी के साथ जो सामाजिक जीवन के तंत्र व प्रणालियाँ हैं, उनका विकास होना चाहिए न कि स्थानापन्न। मानव के सांस्कृतिक व आर्थिक परिदृश्य को प्रभावित करने वाली यह शक्ति युक्तिमात्र ही रहनी चाहिए। यदि यह स्वयं उद्देश्य बन जाती है तो वह संसाधनों के सर्वोत्तम उपयोगों में से एक नहीं है। सूचना का उपयोग सामाजिक विषमता, आर्थिक अवरोधों व सांस्कृतिक जड़ताओं को तोड़ने का साधन होना चाहिए। यदि इसका उपयोग शोषण, विषमताओं आदि से पोषित शक्ति तंत्रों को मजबूत करता है तो यह प्रौद्योगिकी वर्गीय हितों के पोषण का साधन बन सकती है। इसके अतिरिक्त इसका प्रभाव सामाजिक मूल्यों को प्रभावित करने की क्षमता रखता है।

मानव संसाधन के मनोवैज्ञानिक आयाम : यद्यपि चिकित्सकीय मनौवैज्ञानिक और मनोचिकित्सक के बारे में यह कहा जा सकता है कि दोनों का ही मौलिक उद्देश्य समान है: मानसिक अवसाद का निवारण। परन्तु उनका प्रशिक्षण, दृष्टिकोण तथा प्रक्रिया-विज्ञान भिन्न होते हैं। इसके लिए अतिरिक्ति प्रशिक्षण आवश्यक है।

सामाजिक कार्यकर्ता विभिन्न प्रकार की सेवाएं प्रदान करते हैं जो प्राय: सामाजिक समस्याओं, पारंपरिक समाज कार्य करने के अतिरिक्त मनोवैज्ञानिक परामर्श उपलब्ध कराने में सक्षम हो सकते हैं।

मानव संसाधन के आर्थिक आयाम: आपातकालीन प्रबंधकों को विविध क्षेत्रों में प्रशिक्षित किया जाता है जिसमें वे सरकारी और सामुदायिक तैयारियों (अभियान की निरंतरता/सरकारी योजना की निरंतरता) या निजी व्यापार तत्परता (व्यापार निरंतरता प्रबंधन योजना) पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं। प्रशिक्षण स्थानीय, राज्य, संघीय और निजी संगठनों द्वारा प्रदान किया जाता है । इसमें सार्वजनिक सूचना और मीडिया संबंधों से लेकर उच्च स्तर की घटना होने पर निर्णय लेने की क्षमता और रणनीतिक कौशल तक शामिल होते हैं। आपातकालीन प्रबंधन या इससे संबंधित क्षेत्र में स्नातक पूर्व और स्नातक डिग्री प्राप्त करने वालों के लिए शिक्षा के अवसर बढ़ रहे हैं।

इंजीनियर और वैज्ञानिक पर्यावरणीय स्थितियों पर भौतिक, रासायनिक, जैविक, सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक घटकों पर परियोजना, योजनाओं, कार्यक्रमों, नीतियों या विधायी कार्यों के संभावित प्रभावों का आकलन करने के लिए एक प्रणालीगत पहचान और मूल्यांकन की प्रक्रिया का उपयोग करते हैं। यह मूल्यांकन करने के लिए वैज्ञानिक और इंजीनियर सिद्धांतों को लागू करते हैं कि क्या जल की गुणवत्ता, वायु गुणवत्ता, वसा गुणवत्ता, वनस्पति और प्राणीवर्ग, कृषि क्षमता, यातायात, सामाजिक, पारिस्थितिक, ध्वनि, दृश्य (परिदृश्य) आदि पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ने की संभावना है।

इस सभी आयामों में मानव संसाधन का कुशल उपयोग किसी भी समय राष्ट्र के बहुविध विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3)

निम्नलिखित दस्तावेज हिन्दी एवं अंग्रेजी, दोनों भाषाओं में एक साथ जारी किए जाएं:

संकल्प, साधारण आदेश, नियम, अधिसूचना, प्रशासनिक तथा अन्य प्रतिवेदन, प्रेस विज्ञप्ति, संसद के किसी सदन या सदनों के समक्ष रखे जाने वाले प्रशासनिक या अन्य प्रतिवेदन,राजकीय कागज पत्र, संविदा, करार, अनुज्ञप्ति, अनुज्ञा पत्र, सूचनाएं एवं निविदा प्रारूप

भारत में कौशल विकास का महत्व एवं चुनौतियां: एनएमडीसी का योगदान

विनोद कुमार पाण्डे
उप प्रबंधक (का./नैसादा)
एनएमडीसी, निस्प, नगरनार

भारत को अपनी लगभग 63 प्रतिशत जनसंख्या का क्रियाशील आयु में होने का अनोखा जनसांख्यिकीय लाभ है। भारत के समक्ष यह युवा शक्ति विकास दर में वृद्धि करने और शेष विश्व को कुशल श्रमशक्ति प्रदान करने का सुअवसर प्रदान करती है।

भारतीय राष्ट्रीय उच्च शिक्षा आयोग ने अपनी रिपोर्ट में कहा है कि भारत में वर्ष 2020 तक संपूर्ण जनसँख्या की औसत आयु 29 वर्ष होगी, इसके मुकाबले संयुक्त राज्य अमेरिका की औसत आयु 40 वर्ष, यूरोप की 46 वर्ष और जापान की 47 वर्ष होगी। यह आकलन भी किया गया है कि अगले 20 वर्षों के दौरान पूरी दुनिया में औद्योगिक क्षेत्र में श्रमिकों की संख्या 4 प्रतिशत तक घटने की संभावना है, जबकि भारत में यह 32 प्रतिशत बढ़ जाएगी।

परन्तु इन सभी सम्भावनाओं के साथ ही हमारा देश एक विरोधाभासी स्थिति से गुज़र रहा है जहाँ एक ओर पुरुष एवं महिलाएं काम की तलाश में श्रम बाज़ार में सम्मिलित हो रही हैं; वहीं दूसरी ओर उद्योग सही ढंग से प्रशिक्षित श्रम-शक्ति की अनुपलब्धता बता रहे हैं। यह विरोधाभास बढ़ती हुई युवा जनसँख्या की नियोजनीयता में वृद्धि की आवश्यकता को इंगित करते हैं। साथ ही यह देश की अर्थव्यवस्था के तीव्र एवं समावेशी विकास के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु अर्थव्यवस्था को तैयार करने के लिए उपलब्ध श्रम बल के कौशल विकास के महत्व को दर्शाता है।

यह विदित है कि कुल श्रम शक्ति का 93 प्रतिशत भाग असंगठित क्षेत्र में कार्यरत है। लिहाजा कौशल विकास संबंधी प्रयासों की एक प्रमुख चुनौती इस विशाल जनसँख्या को रोजगारपरक कौशल प्रदान करना है, जिससे वो अपने लिए एक अच्छा कार्य सुरक्षित कर पाए और अपने जीवन स्तर को उन्नत बना पाए। हालांकि श्रम बाज़ार की विविधता एवं असंगठित क्षेत्र के महत्व को देखते हुए ऐसा मॉडल तैयार करना चुनौतीपूर्ण है जो अर्थव्यवस्था के समस्त महत्वपूर्ण भागीदारों- रोज़गार प्रदाता, प्रशिक्षणकर्ता, प्रशिक्षु एवं सरकार सभी के लिए अनुकूल एवं लाभकारी हो। शिक्षा एवं उचित प्रशिक्षण से कौशल विकास संभव है; कौशल विकास से ही आत्मनिर्भरता संभव है। वर्तमान युग की जरूरतों को देखते हुए शिक्षा पद्धति में रोजगारोन्मुखी बदलाव की जरूरत है, जिससे पढ़ाई के दौरान ही विद्यार्थी इतना कौशल प्राप्त कर ले कि वह आत्मनिर्भर बन सके और उसे रोजगार की तलाश में दर-दर भटकना नहीं पड़े।

भारत श्रम रिपोर्ट, 2012 के अनुसार परिकल्पना की गई है कि प्रतिवर्ष 12.8 मिलियन लोग श्रम बाज़ार में नये आते हैं। इसकी तुलना में हमारे देश में कौशल विकास की मौजूदा क्षमता 3.1 मिलियन है।

भारत के युवाओं को कौशल प्रदान करने की दिशा में अनेक प्रकार की चुनौतियां हैं। उदाहरणार्थ, मौजूदा प्रशिक्षण कार्यतंत्र की क्षमता में वृद्धि करना ताकि सभी के लिए न्यायसंगत पहुंच सुनिश्चित हो पाए और साथ ही उसकी गुणवत्ता और प्रासंगिकता भी बरकरार रहे। यह एक बड़ी चुनौती है। इसके लिए प्रशिक्षकों के ज्ञानवर्धन के पर्याप्त प्रावधानों के साथ उद्योगों एवं प्रशिक्षण प्रदान करने वाले संस्थानों के मध्य प्रभावी संबंध होने चाहिए। पारंपरिक शिक्षा एवं कौशल विकास के बीच प्रभावी सम्मिलन के क्षेत्र में किए जा रहे सरकारी प्रयासों पर भी और कार्य किया जाना चाहिए। इन सभी को श्रम बाज़ार के अनुरुप होना चाहिए। पाठ्यक्रम, परीक्षा, प्रमाणन, सम्बद्धता एवं प्रत्यायन इस दिशा में अन्य चुनौतियां हैं।

कौशल विकास का राष्ट्रीय मिशन है: प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना।

मोदी जी ने वर्ल्ड यूथ स्किल डे पर 15 जुलाई 2015 को इस मिशन को शुरू किया। भारत सरकार का लक्ष्य इस योजना के द्वारा वर्ष 2022 तक 40 करोड़ भारतीयों को प्रशिक्षित करने का है।

कौशल विकास योजना का मुख्य उद्देश्य भारत के लोगों को विभिन्न क्षेत्रों में प्रशिक्षित कर उनकी कार्य क्षमता को बढ़ाना है। कौशल विकास योजना से युवा कौशल सीख कर अपना काम शुरू कर सकते हैं।

योजना का मुख्य उद्देश्य उन बच्चों के अंदर छिपी प्रतिभा को निखारना है जो गरीबी के कारण उच्च शिक्षा नहीं प्राप्त कर सके। अत: गरीब युवाओं को संगठित करके उनके कौशल का विकास करके गरीबी को ख़त्म करना है।

युवा जिस भी कौशल (जैसे: गाड़ी चलाना, कपड़े सिलना, खाना बनाना, सफाई करना, मकैनिक का काम आदि) को जानते हैं, उस कौशल में प्रशिक्षित कर उनके काम को सरकार द्वारा मान्यता प्रदान करना एवं देश में मौजूद सभी तकनीकी संस्थाओं को बदलती तकनीक के अनुसार अद्यतन और आधुनिकतम बनाना भी इसका लक्ष्य है।

कौशल विकास एवं ग्रामीण विकास :

युवाओं के कौशल विकास के बाद रोजगार की जरूरत होती है। लेकिन देश में दो किस्म के प्रांत हैं, एक ओर ऐसे राज्य हैं जहां रोजगार हैं, उद्योग हैं, और दूसरे ऐसे स्थान हैं जहां युवाशक्ति है। देश में 80 शहर ऐसे हैं जहां 65- 75 फीसदी तक आर्थिक गतिविधियां संचालित की जाती हैं। ये रोजगार प्रदान करने वाले शहर हैं। इसलिए कुशल श्रमिक रोजगार की तलाश में इन शहरों में जाते हैं।

ग्रामीण युवाओं की बेरोजगारी की समस्या को कौशल विकास कार्यक्रम को क्रियान्वित करके दूर किया जा सकता है। अहम नीतिगत फैसले लेकर ग्रामीण युवाओं को पैर पर खड़ा करने का बीड़ा सरकारी, सार्वजनिक उपक्रमों, कॉर्पोरेट जगत और सामाजिक उत्थान में संलग्न संस्थाओ को उठाना होगा, तभी हमारे राष्ट्र के सपने पूरे हो सकते हैं। जब तक ग्रामीण भारत सम्पन्न नहीं होगा देश कैसे सम्पन्न हो सकता है। इसलिए ग्रामीण युवाओं का कौशल विकास युद्धस्तर पर किया जाना चाहिए। परंतु इतना ही काफी नहीं है। प्रशिक्षण प्राप्त युवाओं को रोजगार प्रारंभ करने के लिए आर्थिक मदद भी जरूरी है। उत्पादन इकाई के प्रारम्भ करने के बाद विपणन व्यवस्था को सुचारु रूप से संचालित करने के लिए सरकारी सहयोग जरूरी होगा,जिससे ग्रामीण स्तर पर शुरू हुआ उत्पादन देश के अन्य भागों सहित विदेशों तक पहुँच सके। इसके लिए एक सुदृढ़ नीति जरूरी होगी ।

इस कार्य में निश्चित रूप से पंचायतों की अहम भूमिका है। पंचायतें स्थानीय जरूरतों के मुताबिक कार्यक्रम चलाने, स्किल डेवलपमेंट सेंटर शुरू करने में काफी मददगार साबित हो सकती हैं।

कौशल विकास में एनएमडीसी का योगदान :

देश के कौशल विकास कार्यक्रम में भागीदारी के तहत एनएमडीसी ने कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्रालय के अधीनस्थ राष्ट्रीय कौशल विकास कोष और राष्ट्रीय कौशल विकास निगम (एनएसडीसी) के साथ एक त्रिपक्षीय समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं । इसके तहत एनएमडीसी अपनी सीएसआर पहल में सिविल निर्माण, स्टील क्षेत्र , देख-रेख एवं सफाई में कार्यरत व्यक्तियों के कौशल विकास के लिए प्रशिक्षण का कार्य कर रहा है ।

एनएमडीसी ने बस्तर के दूरवर्ती इलाकों में आई. टी. आई. एवं पॉलिटेक्निक संस्थाओं की स्थापना की है, जिसमें ग्रामीण इलाकों के युवाओं को तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने का सुनहरा अवसर प्राप्त हो रहा है। कौशल विकास के क्षेत्र में एनएमडीसी का यह अतुलनीय योगदान है ।

निष्कर्ष:

देश में कौशल विकास को बढ़ाने के लिए सार्वजनिक-निजी भागीदारी आवश्यक है। कार्पोरेट जगत, सार्वजनिक उपक्रम और प्रशिक्षण संस्थाएं अगर इस पहल से जुड़ जाएं, तो यह ऐसा स्वरूप धारण कर लेगा, जिससे लोगों को हुनरमंद बनाने और भारत को विश्व की स्किल कैपिटल बनाने में आसानी होगी।

सांगठनिक विकास में मानव संसाधन की भूमिका

संजय पाटील
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)
एनएमडीसी, बैलाडीला लौह अयस्क खान
किरन्दुल काम्प्लेक्स

किसी संगठन/कंपनी के निरंतर विकास में और स्थिर अर्थ व्यवस्था में मानव संसाधन की क्या भूमिका होती है यह देखना वर्तमान परिप्रेक्ष्य में बेहद अवश्यक है क्योंकि बढ़ते प्रौद्योगिक प्रचलन और अधुनातन तकनीक के उपयोग में मानव संसाधन की गुणवत्ता एवं सर्वश्रेष्ठता को समावेशी तथा तुल्यकालिक बनाना संगठन के लिए नितांत आवश्यक होता है। मानव संसाधन की आवश्यकता, मौलिकता, प्रभावोत्पादकता, सांगठनिक विकास में भूमिका व इसका अचूक व प्रभावी उपयोग समय की मांग हैं। हम सभी जानते हैं कि किसी भी उद्यम में मानव संसाधन का कितना महत्वपूर्ण स्थान होता है। ऐसे अहम व अत्यंत उपयोगी घटक का उपयोग कोई संगठन जिस खूबी एवं सुप्रबंधन से करता है उस संगठन के विकास की नींव उतनी ही मजबूत होती है।

सबसे पहले यह समझना आवश्यक होगा कि किसी संगठन के निरंतर और यथार्थ विकास के लिए मानव संसाधन का उपयोग किस तरह किया जाना चाहिए। मैं समझता हूँ कि इसके लिए विभिन्न विचारकों द्वारा मानव संसाधन पर की गई परिभाषाओं पर एक नजर डालना जरूरी है। आलोग्बोई ने इस बारे में लिखा है कि ''लोग और ज्ञान तथा कार्यानुभव, कौशल व अभिवृत्ति मानव संसाधन कहलाती है।'' उसी तरह अक्कारी ने माना है कि ''तकनीकी, यांत्रिकी, प्रबंधकीय, सामाजिक व अन्य क्षेत्रों की असीम जानकारी और विशेषज्ञता को मानव संसाधन कहते हैं, जो सामाजिक व आर्थिक विकास में उपयोग में लाया जाता है। इन दोनों महानुभावों के विचारों का यह आशय है कि मानवीय संवेदना, योग्यता, प्रबंधकीय क्षमता व आंतरिक कौशल जैसे गुणों का समावेश मानव संसाधन में होता है और इन गुणों का उपयोग निर्भर करता है सर्व समादेशी प्रबंधन, उच्चमूल्य कार्य योजना, सांगठनिक लक्ष्य, गहन सामाजिक दृष्टिकोण व भविष्यत योजनाओं के कार्यान्वयन पर। इससे न केवल सांगठनिक ढांचा मजबूत होने में मदद मिलती है अपितु एक उच्च मानव संसाधन की संस्कृति मे वृद्धि होती है तथा उसके सही उपयोग का मार्ग प्रशस्त होता है जिससे संगठन के निरंतर विकास को मजबूती मिलती है।

किसी संगठन के कर्मचारियों की क्षमता, योग्यता, अनुभव एवं कौशल उसे उत्पादनशील बनाते हैं। कर्मचारियों द्वारा अपनी क्षमताओं एवं योग्यताओं का अचूक निष्पादन कंपनी की अनुपम निधि है और इस निधि की रक्षा करना कंपनी का उत्तरदायित्व होता है, होना भी चाहिए। मूलत: संगठन मानव संसाधन द्वारा ही निर्मित और प्रबंधित किए जाते हैं। अपनी कंपनी के मुनाफे को दोगुना करना, बाजार शेयर बढ़ाना, वृद्धि की रफ्तार को तेज करना जैसी पहलों पर मानव संसाधन के उचित उपयोग का प्रभाव स्पष्ट देखा जा सकता है और ऐसा करते हुए सामाजिक उत्तदायित्व का निर्वहन एवं नैगम दायित्वों का प्रभावी कार्यान्वयन मानव संसाधन के उपयोग की पहली प्राथमिकता होनी चाहिए।

उक्त तथ्यों पर चर्चा के पश्चात यह प्रश्न स्वभाविक है कि किसी भी संगठन के विकास के लिए मानव संसाधन का उपयोग इतना महत्वपूर्ण क्यों बन जाता है। इसका सीधा सा स्पष्टीकरण दिया जा सकता है कि मानव संसाधन नियोजन एक बेहद महत्वपूर्ण मामला है और इसके लिए अत्यंत

प्रतिस्पर्धी, चुनौतीपूर्ण व प्रतिबद्ध उच्चतर प्रबंधकीय टीम का संगठन में होना अत्यावश्यक होता है। उच्च प्रबंधन टीम द्वारा किया गया प्रभावी रणनीतिक मानव संसाधन नियोजन पर्याप्त रूप में कंपनी के निर्धारित लक्ष्यों को हासिल करने में सक्षम होता है जिसके कई लाभ देखे जा सकते हैं:-

1. संगठन की चुनौतियों में संतुलन बनाना
2. संसाधनों का समानांतर आबंटन
3. ग्राहक अनुकूल क्रियाकलाप
4. सांगठनिक व्यापार रणनीति व लक्ष्यों की प्राप्ति के बीच संतुलन
5. उद्योग विस्तारीकरण व विविधीकरण पहलों का प्रभावी कार्यान्वयन
6. संप्रेषण कौशल का विकास
7. कार्य उद्देश्य निर्धारण व परिवर्तन के लिए सदैव तैयार रहना
8. व्यापार कार्य योजना के बेहतर क्रियान्वयन के लिए नई रणनीतियां बनाना
9. व्यापार जोखिम को कम करना
10. आर्थिक, सामाजिक प्रतिबद्धता आदि

मानव संसाधन के उचित उपयोग के लिए कंपनियां निरंतर प्रयत्नशील रहती हैं। आज के घोर प्रतिस्पर्धा के युग में अपने कर्मचारियों को अत्यधिक चुनौतीपूर्ण व सक्षम बनाने के लिए कंपनियां कोई कोर-कसर नहीं छोड़ना चाहती हैं। प्रशिक्षण कार्यक्रम इसके लिए एक महत्वपूर्ण साधन साबित हुआ है। कर्मचारियों की आंतरिक विशेषज्ञता बढ़ाने के लिए और उन्हें उद्योग जगत में हो रहे नए-नए परिवर्तनों में सहज बने रहने के लिए कई तरह के प्रशिक्षण कार्यक्रम लाए जाते हैं। आज के सूचना प्रौद्योगिकी युग में कई कंपनियां मानव संसाधन नियोजन साफ्टवेयरों का भी प्रयोग करती हैं। इससे कौशल नियोजन, ज्ञान व कार्यानुभव को अद्यतन रखने में मदद मिलती है और साथ ही संगठन तथा कर्मचारियों को पेशेवर संतुष्टि भी मिलती है। इन सबके अलावा संगठन कर्मचारियों के कल्याण एवं उनके सर्वांगीण विकास पर भी निरंतर ध्यान देते हैं ताकि ऐसी पहलों से कंपनी को स्थिरता मिले व उसकी उत्तरोतर उन्नति हो सके। प्रशिक्षण से अपनी कमियां ढूंढने, व्यापार को विस्तार देने और समय रहते व्यापार रक्षोपाय करने के साथ ही कई सारे लाभ देखे जा सकते हैं जो निम्नवत हैं:

1. अंतर व्यक्तिगत संप्रेषण कौशल का विकास
2. संगठन कौशल की वृद्धि
3. ग्राहक सेवा कौशल का विकास
4. नई तकनीकों से तादात्म्य
5. कंपनी की नीति व उद्देश्यों की जानकारी
6. कार्य शीघ्रता व सहजता से निष्पादित करने के कौशल का विकास आदि

उक्त बातों को देखने के पश्चात पता चलता है कि किसी भी संगठन के विकास में मानव संसाधन का महत्व अद्वितीय है। संगठन का शीर्ष प्रबंधन बेहद ही समझदारी और बड़ी ही व्यावहारिकता से मानव संसाधन का उपयोग करता है। भविष्य में इसके असरदार परिणाम पाने के लिए सदैव नई कार्य योजना पर कार्य करता रहता है जिससे रचनात्मकता का अविष्कार हो जाता है। कर्मचारी की प्रतिभा व अनुभव को समझते हुए उसके अनुसार कार्य आबंटन से निश्चय ही बेहतर कार्य निष्पादन हो सकता है और साथ ही कर्मचारी भी ऐसे कार्य करने में आंतरिक खुशी महसूस करते हैं जो नियोक्ता व कर्मचारी दोनों के वृहद हित में है और ये बातें संगठन के सतत विकास में बहुत सहायक सिद्ध होती हैं। अत: यह कहना बहुत ही उपयुक्त है कि संगठन चाहे छोटा हो या बड़ा सरकारी हो या फिर निजी उसके विकास में मानव संसाधन का असीम योगदान होता है।

स्वच्छ भारत

स्वच्छ रहे भारत, स्वच्छ रहें हम,
स्वच्छता की ओर बढ़ायें अपने कदम।

क्या आपको पता है कि आजादी के 71 साल बाद भी हम भारतीय अपने-अपने अस्वच्छ वातावरण के लिए जाने जाते हैं। हमारी स्वच्छता और पवित्रता सिर्फ हमारी पूजा पाठ और घर तक ही सीमित होकर रह गई है। अकसर हम अपने घरों को साफ कर वही कचरा सड़क, रास्ते, पार्क और सार्वजनिक जगहों में फेंक देते हैं। हम अपने आसपास के वातावरण को साफ रखने में भी कोताही करते हैं।

देश को स्वच्छ बनाने के लिए सरकार द्वारा राष्ट्रव्यापी सफाई अभियान ''स्वच्छ भारत अभियान'' चलाया जा रहा है। इस अभियान में शौचालयों का निर्माण करवाना, साफ पीने का पानी हर घर तक पहुँचाना, स्वच्छता कार्यक्रमों को बढ़ावा देना, सड़कों की सफाई करना और देश के बुनियादी ढाँचे को बदलना आदि शामिल है। परंतु यह मानना होगा कि भारत देश को स्वच्छ बनाने का काम किसी एक अकेले व्यक्ति या अकेली सरकार का नहीं है बल्कि यह तो देश के 125 करोड़ भारतवासियों का कर्तव्य है। हमारे प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने भी इसी संदर्भ में एक नारा दिया है कि''न गंदगी खुद करेंगे और न दूसरों को करने देंगे''।

स्वच्छ भारत अभियान के उद्देश्य एवं दिशा निर्देश निम्नानुसार है:

1. हर किसी को शौचालय की सुविधा उपलब्ध करा के खुले में शौच को पूरी तरह से खत्म करना है।
2. अनुपयोगी एवं बेकार शौचालयों को फ्लशिंग शौचालय में परिवर्तित करना है।
3. हाथ से की गई सफाई (मैन्युअल स्केवेंजिंग) प्रणाली को समाप्त करना है।
4. हर गली-मुहल्ले को साफ रखना है तथा पंचायत के माध्यम से सभी ठोस और तरल अपशिष्ट प्रबंधन सुनिश्चित किए जाएं । वर्ष 2019 तक सभी परिवारों को पानी की आपूर्ति सुनिश्चित करने हेतु गाँवों में भी पाइपलाइन बिछाना है।
5. भारत को स्वच्छ बनाने के लिए लोगों के रवैये, मनोभावना और विचारों को बदलना है।
6. सभी बेकार चीजों को वैज्ञानिक प्रक्रियाओं द्वारा ठोस अपशिष्टों के पुनर्चक्रीकरण के माध्यम से पुन: उपयोग करने के लायक बनाना है।

सत्यप्रकाश वर्मा
प्रबंधक (यांत्रिकी)
एनएमडीसी, निस्प, नगरनार

7. ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों को जीवन में स्वच्छता के प्रति प्रेरित करने हेतु स्वास्थ्य, शिक्षा जैसे जागरूकता कार्यक्रमों को समुदायों और पंचायती राज संस्थानों द्वारा संचालित करना है।
8. भारत देश को एक स्वच्छ, सुंदर और विकसित देश बनाना है।

स्वच्छ भारत अभियान में निम्नानुसार योगदान दिया जा सकता है :

1. स्वच्छता की शुरूआत स्वयं से होती है। अत: हमें तन,मन से अपने आस-पास स्वच्छता का परिवेश बना कर रहना चाहिए ताकि खुद भी स्वच्छ रहें तथा दूसरों को भी स्वच्छ रहने के लिए प्रेरित कर सकें।
2. स्वच्छता घर से ही शुरू करनी चाहिए। घर के अंदर एवं आसपास की सफाई करके कचरे को नगर निगम द्वारा प्रदत्त कचरा डिब्बा के अंदर ही डालें । आस पास की नालियों में मच्छर न पनप सके इसके लिए फिनाइल, ब्लीचिंग पाउडर का सहारा ले सकते हैं।
3. कभी भी सड़क पर न थूकें और न यहाँ वहाँ नाक साफ करें तथा अपने परिवेश को साफ रखें।
4. गाँव के बुजुर्गों को शौचालयों का उपयोग करने के लिए अवगत कराया जा सकता है।
5. खुद वृक्षारोपण करें और दूसरों को प्रेरित करें ताकि हम एक हरे-भरे एवं सुंदर परिवेश का निर्माण कर सकें।

स्वच्छता है एक महाभियान, सभी करें अपना योगदान।

स्वास्थ्य का महत्व और सिद्धांत

एम.के.एस. खादरी
सहायक प्रबंधक (राजभाषा)
एनएमडीसी, एसआईयू, पालोंचा

मावन शरीर में कई अंग है। इन अंगों का स्वस्थ होना ही स्वास्थ्य है अर्थात स्वास्थ्य शारीरिक, मानसिक और सामाजिक कल्याण की स्थिति है। इस संसार में स्वास्थ्य को अधिक महत्व दिया जाता है। अच्छा स्वास्थ्य बनाए रखना कई कारकों पर निर्भर करता है जैसे कि अच्छी हवा, अच्छा पानी, अच्छा भोजन, अच्छी सोच और अच्छा व्यायाम आदि ।

मानव शरीर के संबंध में कबीर दास ने कहा है:

कबीर गर्व ना किजीये, देहि देखि सुरंग
बिछुरै पै मेला नहीं, ज्यों केचुली भुजंग।

कबीर जी अपने शरीर की सुंदरता पर गर्व नहीं करने की सलाह देते हैं । अगर यह शरीर घट जाता है अर्थात मृत्यु हो जाती है तो यह शरीर साँप की केंचुली की तरह पुन: नहीं मिलता है।

कुछ लोग शारीरिक और मानसिक रूप से मजबूत रहने की जरूरत और महत्व की अनदेखी करते हैं, उन्हे यह समझना चाहिए कि मानसिक स्वास्थ्य बनाए रखना और उस दिशा में काम करना कितना महत्वपूर्ण है।

माता-पिता अक्सर अपने बच्चों के भोजन पर दृष्टि रखते हैं और उनके शारीरिक स्वास्थ्य को बनाये रखने के लिए प्रयास करते हैं। माताएं अपने बच्चों को शारीरिक रूप से मजबूत और ऊर्जावान बनाने के लिए अलग-अलग तरीकों का उपयोग करते हुए उन्हे भोजन करने के लिए आग्रह करती हैं ।

जीवन में सफलता के लिए अच्छा स्वास्थ्य बहुत जरूरी है। संतुलित भोजन से स्वास्थ्य अच्छा रहता है। उदाहरण के लिए विद्यार्थी अगर स्वस्थ नहीं रहेंगे तो पढ़ने में मन नहीं लगेगा । वे हमेशा खुद को कमजोर महसूस करते रहेंगे।

जो व्यक्ति तन और मन से स्वस्थ होता है, वह संसार का सबसे सुखी प्राणी है, क्योंकि स्वस्थ तन में ही स्वस्थ मन रहता है । हमारे ऋषि-मुनियों ने शुरु से ही स्वास्थ्य के महत्व को स्वीकार किया है और स्वस्थ बने रहने के लिए प्रकृति के नियमों का पालन करने की सलाह दी है। जो मनुष्य सूर्योदय से पूर्व उठते हैं और अपनी दिनचर्या पूरी करके निर्धारित समय के अनुसार अपना जीवन व्यतीत करते हैं, अच्छे भाव से कर्म करते हैं तथा रात्रि में समय पर शयन करते हैं वे हमेशा स्वस्थ रहते हैं। प्रकृति के नियमों का पालन, कठोर शारीरिक परिश्रम और पौष्टिक एवं सादा भोजन स्वस्थ रहने का आसान मंत्र है। इस संबंध में गौतम बुद्ध ने कहा: ''स्वास्थ्य सबसे बड़ा उपहार है, संतोष सबसे बड़ा धन है, वफादारी सबसे बड़ा संबंध है।''

समग्र स्वास्थ्य के रुप में हम शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक स्वास्थ्य, बौद्धिक स्वास्थ्य, आध्यात्मिक स्वास्थ्य और सामाजिक स्वास्थ्य को मान सकते हैं।

शारीरिक स्वास्थ्य शरीर की स्थिति को दर्शाता है। अच्छे शारीरिक स्वास्थ्य को सुनिश्चित करने के लिए संतुलित आहार, गहरी नींद, व्यायाम आदि अति आवश्यक हैं।

मानसिक स्वास्थ्य का अर्थ हमारे भावनात्मक और आध्यात्मिक चिंतन से है जो हमें अपने जीवन में दु:ख, निराशा और उदासी की स्थितियों में जीवित रहने के लिए

सक्षम बनाता है। मानसिक स्वास्थ्य में हमारी भावनाओं को व्यक्त करने और जीवन की सारी माँगों के प्रति अनुकूल बनने की क्षमता हैं। प्रसन्नता, शांति, आत्म-संतुष्टि, मन की संतुलित अवस्था आदि मानसिक स्वास्थ्य के लिए आवश्यक हैं।

किसी व्यक्ति के जीवन में कौशल और ज्ञान का विकास करने के लिए आवश्यक क्षमता को बौद्धिक स्वास्थ्य कहते है। बौद्धिक क्षमता हमारी रचनात्मकता को प्रोत्साहित करने और निर्णय लेने की क्षमता का सुधार करने में मदद करती है। दूसरों की आवश्यकताओं की समझ, सभी प्रकार के व्यवहारों में शिष्ट रहना व नए विचारों के लिए खुलापन, उच्च भावात्मक बुद्धि, आत्म-संयम, भय, क्रोध, मोह, जलन, अपराधबोध आदि समस्याओं का सामना करने व उनका बौद्धिक समाधान तलाशने में निपुणता आदि बौद्धिक स्वास्थ्य के अंतर्गत आते हैं।

मानव का स्वास्थ्य आध्यात्मिक रुप से स्वस्थ हुए बिना अधूरा है। जीवन के अर्थ और उद्देश्य की तलाश करना मानव को आध्यात्मिक बनाता है। आध्यात्मिक स्वास्थ्य मानव की निजी मान्यताओं और मूल्यों को दर्शाता है। समुचित ज्ञान की प्राप्ति तथा स्वयं को एक आत्मा के रूप में जानने का निरंतर बोध अपने शरीर सहित इस भौतिक जगत की किसी भी वस्तु से मोह न रखना आध्यत्मिक स्वास्थ्य कहलाता है।

मानव सामाजिक जीव है। अत: संतोषजनक रिश्ते का निर्माण करना और उसे बनाए रखना सामाजिक स्वास्थ्य कहलाता है। संतोषप्रद व दीर्घकालिक मित्रता, परिवार व समाज से जुड़े संबंधों को हार्दिक व अक्षुण्ण बनाए रखना, अपनी व्यक्तिगत क्षमता के अनुसार समाज के कल्याण के लिए कार्य करना आदि सामाजिक स्वास्थ्य के अंतर्गत आते हैं।

जीवन प्रतिस्पर्धाओं से भरा पड़ा हैं इस तथ्य को पहचान कर स्वास्थ्य के प्रति जागरुक होना चाहिए। सरकार द्वारा देश की भलाई के लिए अच्छी स्वास्थ्य सुविधाएँ प्रदान की जाती हैं। हम सभी को इन सुविधाओं का सही लाभ उठाना चाहिए, तभी देश का उचित कल्याण होगा।

अच्छे स्वास्थ्यके लिए आचार्य जयशंकर प्रसाद ने कहा है:

''शीघ्र सोने और प्रात:काल जल्दी उठने से मानव अरोग्यवान, भाग्यवान और ज्ञानवान होता है।''

आकार लेता हुआ निस्प

यशवंत देवांगन
प्रबंधक (कार्मिक)
एनएमडीसी, निस्प, नगरनार

चोकावाडा को जब मैं देखता हूं,
स्तब्ध व अचंभित कर देने वाला दृश्य
निस्प का समग्र स्वरुप गढ़ा हुआ
अविश्वसनीय, गर्व से खड़ा हुआ,
हरीतिमा संवर्धन के लिए लाखों पेड़ -
पौधे लगाता हुआ,
स्थानीय लोगों की आशाओं,
अपेक्षाओं में खरा उतरता हुआ,
समग्र विकास की अवधारणा , नैगमिक सामाजिक
दायित्व का पूर्णत: निर्वहन करता हुआ
स्टील संयंत्र से उत्पादन की ओर अग्रसर, एक लक्ष्य,
एक स्वप्न साकार होता हुआ,
बस्तर अब पिछड़ा नहीं , कुशल व आधुनिक बनता हुआ
इस्पात क्रांति, विकास क्रांति का गवाह बनता हुआ
बस्तर की पावन धरा पर एक स्वर्णिम इतिहास रचता हुआ
विश्व पटल पर अमिट छाप छोड़ता हुआ निस्प
एनएमडीसी की परिकल्पना साकार करता हुआ
अत्याधुनिक तकनीक से भारत का उज्जवल
भविष्य तैयार होता हुआ
खाली धरती पर हुआ यह अद्भुत, असाधारण निर्माण,
ऊँची ऊँची चिमनियाँ, विशालकाय पाइप लाइने
कहीं गोल, कहीं चौकोर,
कहीं बहुत बड़े - बड़े यन्त्र व मशीनें,
कठिन परिश्रम से सफलता की हकीकत बयां करता हुआ
हजारों लोगों के जीवन में नवीन आशा व उमंग का संचार
करता हुआ , निस्प... हमारा निस्प

राजभाषा पत्रकारिता और राजभाषा हिन्दी

डॉ. रजिन्दर कौर
सहायक प्रबंधक (रा.भा.)
एनएमडीसी, मुख्यालय, हैदराबाद

पत्रकारिता संचार का सबसे पुराना, सुलभ लोकप्रिय और टिकाऊ साधन है। वर्तमान युग में संचार साधनों की कोई कमी नहीं है चाहे इनमें से कुछ ही लोकप्रिय हुए ,कई लम्बे समय तक टिके रहे ,कई प्रभावशाली सिद्ध हुए ,कुछ एक लुप्त हो गए और कई लुप्त होने की कगार पर हैं। परंतु किसी भी दौर में पत्रकारिता का कभी कोई प्रतिद्वंदी न बन सका और यह प्रत्येक समय में आवश्यकतानुसार अपनी प्रखर भूमिका निभाती हुई आगे बढ़ती गई। अपने पारंपरिक स्वरुप सहित अपनी कई नई विधाओं को विकसित करते हुए एक वट वृक्ष की भांति विस्तृत होती चली गई। वर्तमान दौर में पत्रकारिता ने समग्र रुप से अपनी प्रत्येक विधा में महत्वपूर्ण स्थान बनाया है। प्रत्येक वर्ग, प्रत्येक बौद्धिक स्तर समूह तथा प्रत्येक आयु वर्ग की रुचि का ध्यान रखते हुए सदैव जागरुक एवं सुचेत हो अपनी ही विधाओं की प्रतियोगी एवं प्रतिस्पर्द्धी बन विकास पथ पर अग्रसर रही है।

हिन्दी पत्रकारिता का अपना एक लम्बा इतिहास क्रम है। जिसकी अधिक तह में न जाते हुए मोटे रुप से हम उन दिनों की बात करते हैं जब हम आजादी की कल्पना भी नहीं कर सकते थे। गुलाम, बेबस भारत जब गहन अंधेरे में हिचकोले खा रहा था उस समय भारत में प्रेस की स्थापना एवं भारत में पत्रकारिता का आरंभ टिमटिमाते दीपक के आलोक की भांति देखते ही देखते चारों ओर फैल गया। चाहे यह पहल ब्रिटिश सैनिक हिक्की द्वारा की गई थी किंतु सूचना के आदान -प्रदान ने भारत को एकजुट होने और स्वराज्य स्थापित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। भारत को अपनी सोच बदलने तथा विकास की ओर अग्रसर होने के अवसर प्राप्त हुए। इस तथ्य को नकारा नहीं जा सकता कि देश की आजादी में पत्रकारिता ने अहम भूमिका निभाई। उस दौर में एक के बाद एक अंग्रेजी, उर्दू, फारसी, बंगला, हिंदी आदि भाषाओं में असंख्य द्विभाषी , त्रिभाषी अखबार निकलने लगे। इतना ही नहीं पत्रकारिता ने आगे चल कर अपनी नई विधाएं विकसित की और सम्पूर्ण विश्व को अपने पक्ष में कर लिया।

इसी क्रम में स्वतंत्र देश की आवश्यकताओं के तहत सरकारी संरक्षण में कई उद्योग एवं कल-कारखाने पनपने लगे और स्वतंत्रता के उत्साह में विकास की योजनाओं, उत्पाद-उत्पादन की चर्चाओं के आधार स्तंभ के रुप में संगठनात्मक संचार की आवश्यकता महसूस की गई। सरकारी क्षेत्रों के संगठनों ने राजभाषा हिंदी में पत्रकारिता का आरंभ किया जिससे राजभाषा नीति के कार्यांवयन में महत्वपूर्ण सहयोग मिल सके और संगठन की गतिविधियों एवं कार्मिकों के लेखन को एक सशक्त आधार भी प्राप्त हो सके। इस दिशा में सरकारी क्षेत्रों से जुडी राजभाषा पत्रकारिता त्वरित गति से आगे बढ़ी और अपनी नई विधाएं भी विकसित करती चली गई।

हिंदी भाषा और राजभाषा हिंदी नि:संदेह एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। किंतु हिंदी भाषा और राजभाषा हिन्दी के व्यवहार में जिस प्रकार लेश मात्र अंतर दिखाई देता है उसी तरह वही अंतर हम हिंदी पत्रकारिता और राजभाषा हिंदी पत्रकारिता में भी देख सकते हैं। इन दोनों के निर्गमन स्थान एवं फलने-फूलने के स्थान भिन्न होने के कारण राजभाषा पत्रकारिता हिंदी पत्रकारिता से कुछ भिन्न है और पूर्णरुप से स्वतंत्र दिखाई नहीं देती है। इस के पीछे ठोस कारण यह है

कि सरकारी क्षेत्रों से जुडे होने के कारण इसे सरकारी नियंत्रण में चलना है। नियंत्रण जहां सुरक्षा का कवच देता है वहीं दूसरी ओर कुछ सीमाएं भी बांध देता है। एक दायरा, एक आज्ञा चक्र जिसके भीतर रह कर कर्तव्य निर्वाह करना होता है। हालांकि राजभाषा पत्रकारिता की सीमाएं, नियंत्रण सहज हैं, स्वाभाविक हैं। संघ सरकार द्वारा घोषित राजभाषा हिंदी सरकारी क्षेत्रों के कार्यालयों में प्रयोग की जाती है और उन्हीं सरकारी संगठनों के आश्रय में राजभाषा पत्रकारिता का जन्म हुआ और इसी छत्र छाया में ही इसे विकास करना है। यह पत्रकारिता चूंकि सरकारी संगठनों की पत्रकारिता है अत: यह स्वाभाविक है कि यह उस व्यवसाय विशेष से संबंध रखती होगी। अपनी इसी प्रवृत्ति के कारण इसे हम कई रुपों में देख सकते हैं :

राजभाषा हिंदी पत्रकारिता

- राजभाषा साहित्यिक पत्रकारिता यथा : राजभाषा भारती, भाषा, संस्कृति
- कार्यालयीन पत्रकारिता यथा : इस्पात भाषा भारती, मेकान भारती, प्रतिध्वनि
- सांस्कृतिक पत्रकारिता यथा : भिलाई भाषा भारती, प्रेरणा, इला भारती,
- औद्योगिक पत्रकारिता यथा : लोक उद्योग
- वैज्ञानिक पत्रकारिता यथा : विज्ञान परिचय

इस के अलावा व्यवसाय के अनुसार वैज्ञानिक, सूचना प्रधान, मनोरंजनात्मक एवं क्रीड़ा प्रधान आदि स्वरुप सामने आते हैं। राजभाषा पत्रकारिता अपने संगठन का समाचार देती है। अर्थात, माल की गुणवत्ता, नफा-नुकसान, योजनाएं, लक्ष्य आदि के अलावा कार्यरत व्यक्तियों की लेखनी का परिचय भी देती है। इसका वितरण आंतरिक होने के कारण एक संगठन दूसरे संगठन की नीतियों, योजनाओं एवं कार्य शैली से परिचित होता है। संगठन विशेष के उत्पाद की सम्पूर्ण जानकारी की अभिव्यक्ति से भाषा के विभिन्न रुप सामने आते हैं तथा नई शब्दावलियों आदि की जानकारी मिलती है ।

राजभाषा पत्रकारिता को मोटे रुप से जान लेने के पश्चात इस पत्रकारिता को जीवंत बनाने वाले तथ्य हैं: वहां की जनशक्ति और उनकी भाषा। राजभाषा पत्रकारिता को व्यावहारिक एवं लोकप्रिय बनाने में भाषा रीढ़ की तरह कार्य करती है। अर्थात, राजभाषा पत्रकारिता की भाषा पर ध्यान देना इसलिए महत्वपूर्ण है कि यह अपने संगठन का प्रतिनिधित्व करती है, अपने संगठन को दूसरे संगठन से जोड़ती है एवं भाषा का प्रचार -प्रसार करती है। किसी भी संगठन का नफा नुकसान जिस प्रकार देश की आर्थिक स्थिति पर प्रभाव डालता है उसी तरह भाषा की सम्प्रेषणशीलता एवं अभिव्यक्ति की पद्धति विचारों, तथ्यों एवं सूचना के आदान-प्रदान पर प्रभाव डालती है । अत: यह और भी आवश्यक हो जाता है कि राजभाषा पत्रकारिता के भाषा प्रबंध की ओर ध्यान दिया जाए। भाषा प्रबंध अर्थात भाषा की वह व्यवस्था जिसके माध्यम से राजभाषा पत्रकारिता अपना संदेश अन्य तक पहुंचाती है। जहां तक संप्रेषण की बात है तो संप्रेषण स्पष्ट और सरल होना चाहिए तभी संचार की प्रक्रिया सफल एवं आदर्श मानी जाएगी। राजभाषा पत्रकारिता अपने संदेश का सम्प्रेषण जिस भाषा के माध्यम से करती है वह संचार प्रक्रिया स्पष्ट, सटीक और प्रभावशाली होनी चाहिए। इस आदर्श संचार अथवा संवाद से संगठन की छवि अधिक प्रखर होगी।

राजभाषा पत्रकारिता के भाषा प्रबंध पर ध्यान देना इसलिए भी आवश्यक है कि राजभाषा हिंदी की पत्र-पत्रिकाएं देश के अलग-अलग हिस्सों में स्थापित सरकारी उद्योगों, कार्यालयों से प्रकाशित होती हैं। यहां तक कि देश में एक ही संगठन के विभिन्न स्थानों में स्थापित कार्यालय, मुख्यालय, एकक एवं परियोजनाएं अलग-अलग पत्रिकाएं प्रकाशित करते हैं। जब एक ही संगठन की पत्रिका अलग अलग स्थानों से प्रकाशित होती है तो यह स्वभाविक है कि उस

पत्रकारिता की भाषा पर वहां का प्रभाव अवश्य पड़ेगा। पत्रकारिता पर स्थानीय भाषा का प्रभाव, कार्यरत विभिन्न भाषा-भाषी कार्मिकों की मातृ भाषा का प्रभाव, उनकी वैयक्तिक लेखन शैली का प्रभाव, उत्पादन से संबंधित मशीनरी, उपकरणों, यंत्रों, औजारों के स्थानीय भाषा में विभिन्न नाम, उस क्षेत्र के आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक विश्वासों एवं अंधविश्वासों का प्रभाव कर्मचारियों की लेखन शैली में आवश्यक रुप से दिखाई देता है फिर चाहे वह साहित्यिक रचना हो या संगठनात्मक सूचना। स्थानीय भाषा का प्रभाव रचनाओं में किंचित परिलक्षित होगा ही यह स्वाभविक ही है किंतु कहीं यह किंचित भाषायिक भिन्नता का प्रभाव पत्रकारिता को कठिन, उबाऊ, नीरस एवं खंडित न कर दे। इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखते हुए पत्रकारिता के सम्पादन अथवा प्रकाशन के समय अधिक जागरुकता एवं अवधान की आवश्यकता होती है। ऐसी कुछ सावधानियां हैं जिन्हें अपना कर राजभाषा पत्रकारिता को मजबूत भाषायी आधार प्रदान किया जा सकता है।

राजभाषा पत्रकारिता के सम्पादकीय या सारगर्भित लेख अथवा तकनीकी जानकारियों में भाषा का स्वरुप एक होना चाहिए, जो स्थानीय कर्मचारियों की समझ में आसानी से आ जाए। साथ ही, देश के बाकी हिस्सों में भी पत्रिका अपना सम्पूर्ण संदेश प्रेषित कर सके। यही बात प्रत्येक संगठन की पत्रकारिता पर लागू होनी चाहिए। अत: ऐसे शब्द, ऐसे वाक्यांशों ,ऐसी प्रयुक्तियों, मुहावरों, लोकोक्तियों का प्रयोग न किया जाए जिनका प्रादेशिक तौर पर दूसरा अर्थ निकलता हो। भारत के उत्तर में एक मुहावरा प्रचलित है- 'हाथ देना' जिसका उस क्षेत्र में अर्थ सहायता करने से लगाया जाता है। किंतु भारत के दक्षिण क्षेत्र के कई भागों में इस का अर्थ ''धोखा देना'' माना जाता है -उसने आवश्यकता के समय मुझे हाथ दे दिया। इसी प्रकार भाषा में व्यक्ति विशेष की लेखनी, स्थानीय प्रभाव भी पत्रकारिता में परिलक्षित नहीं होना चाहिए। विभिन्न स्थानों पर बसे सरकारी क्षेत्रों के संगठन अपनी भाषायी विभिन्नताएं एवं वर्तनी में भिन्नताएं अवश्य रखते हैं। जैसे स और श एवं ष का प्रयोग, व अक्षर के स्थान पर ब का प्रयोग,आधे अक्षर के स्थान पर पूर्ण अक्षर का प्रयोग आम तौर पर देखा जा सकता है। इसके अलावा ऐसे बहुत से शब्द हैं जिनका स्थानीय अर्थ भिन्न होता है जैसे अंग्रेजी शब्द 'बकेट' को 'बालटी' अथवा 'डोल' शब्द से जाना जाता है। उत्तर भारत के कुछ ही क्षेत्रों में बकेट के लिए डोल शब्द का प्रयोग होता है जबकि 'बालटी' शब्द को भारत के लगभग सभी हिस्सों में समझा जाता है। इसी प्रकार 'बालू टीला' शब्द के स्थान पर 'बालू टिब्बा' शब्द का प्रयोग भी चलता है किंतु टिब्बा क्षेत्रीय शब्द है। ऐसी स्थिति में स्थानीय शब्दों को छोड़ कर प्रचलित शब्दों को स्थान दिया जाना चाहिए।

राजभाषा पत्रकारिता का पत्रकार अथवा संपादक किसी अन्य पद का स्वामी भी होता है। वह अपने अन्य कार्यों के साथ पत्रिका के सम्पादन , रुपांकन ,साज सज्जा, प्रूफ अशुद्धियों आदि का भी निर्वाह करता है। अत: इस दोहरी भूमिका में उसका उत्तरदायित्व बढ़ जाता है। उसे पत्रकारिता के भाषायी सम्प्रेषण को राजभाषा की मानक शब्दावलियों , प्रयुक्तियों एवं पारिभाषिक शब्दों की कसौटी पर खरा उतारना ही होता है। यह भी आवश्यक है कि पत्रकारिता में निहित सूचनाएं, समाचार भाषा के मानक रुप में होने चाहिए जो समूचे देश में पठनीय हों।

हिंदी की प्रचलित एवं लोकप्रिय पत्रकारिता यथा इंडिया टुडे, सिने पत्रकारिता, पीत पत्रकारिता, जासूसी कहानियां, आलोचना, कादम्बिनी , मनोहर कहानियां आदि में जिस प्रकार की भाषा का प्रयोग होता है वह हमें राजभाषा पत्रकारिता में दिखाई नहीं देता। इसका कारण यही है कि यह सरकारी क्षेत्र से जुड़ी है और कार्यालयों में कार्य के अनुसार प्रयुक्त शब्दावलियां, प्रयुक्तियां आदि का प्रयोग ही अधिक देखने को मिलता है यथा लोहा गरम, पारा चढ़ना, भट्टी गर्म, ठण्डा पड़ना , एसेडिक प्रभाव, पिट की गहराई, मीटर आदि। इस प्रकार की शब्दावलियां देखने को मिलती हैं जिनमे भाषा के अभिधा, लक्षणा और व्यंजना रुप का भी प्रयोग होता

है । किसी संगठन के कार्मिक की साहित्यक रचना में भी हम उसी प्रकार के शब्दों को देख सकते हैं जिन शब्दों एवं शब्दावलियों को वह अपने कार्य के सम्पादन में प्रयोग करता है। हिंदी पत्रकारिता में जहां भाषा की कोई सीमा नहीं होती एवं क्षेत्रीय, प्रादेशिक, आंचलिक शब्दों की भरमार होती है, भाषा प्रयोग के कई स्वरुप, कई पक्ष दिखाई देते हैं। साधारण बोलचाल की भाषा, साहित्यिक भाषा, गूढ साहित्यिक भाषा, संस्कृत निष्ठ भाषा अथवा स्थानीय भाषा, स्थानीय बोली अथवा उप बोली का प्रभाव भी देख सकते हैं। भाषा के खुले एवं अबाध प्रयोग से हिंदी पत्रकारिता को नुकसान नहीं पहुंचता क्योंकि उसका क्षेत्र विस्तृत है। उसका पाठक समूचा देश है । यहां तक कि एक प्रकार की शब्दावली को समझने एवं पसंद करने वाले पाठकों की भी अत्यधिक संख्या उपलब्ध है। जहां एक ओर हिंदी पत्रकारिता में भाषा का फैलाव अथवा क्षेत्रीय शब्दों का समावेश, पर्यायवाची शब्द एवं अनेकार्थी शब्द भाषा के विकास की गति को तो तेज करते हैं वहीं राजभाषा पत्रकारिता में ऐसे प्रयोग एक सीमित मात्रा में ही उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं। यहां तक कि पर्यायवाची शब्दों का भी सोच समझ कर प्रयोग करना होता है।

पत्रकारिता की भाषा में मशीनों का क्रय-विक्रय, कलपुर्जों की खपत, सुपुर्दगी में ढिलाई, अधिक मांग , माल जब्त, बरामद, माल की निकासी, उत्पाद की शुद्धता जैसी शब्दावली कारखानों की शब्दावली के रुप में स्वत: पहचानी जाती है। इसी प्रकार अपने अन्य कार्य क्षेत्र से संबंधित शब्दावली भी पत्रकारिता को कार्य अनुसार अलग विधा प्रदान करती है। राजभाषा पत्रकारिता में प्रयोग क्षेत्र बांध दिया गया है। एक अर्थ के लिए एक शब्द प्रयुक्त कर दिया गया है। राजभाषा पत्रकारिता में इस प्रकार की पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग उसे क्षेत्रीय प्रयोग से ऊपर उठा सकता है। हालांकि राजभाषा पत्रकारिता में भाषा के उक्त प्रयोग सरल नहीं है किंतु जब एक संगठन क्षेत्रीय भिन्नता के बावजूद इनका उपयोग करेगा तो राजभाषा पत्रकारिता सभी पक्षों से सम्पूर्ण देश में पठनीय हो सकती है।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि राजभाषा पत्रकारिता हिंदी पत्रकारिता की तरह ही अपना पृथक स्थान रखती है भले ही भाषा के संबंध में क्षेत्रीय प्रयोग भी होते हैं,बोलचाल की भाषा एवं साहित्यक भाषा भी दृष्टिगोचर होती है। परन्तु हिंदी पत्रकारिता की तुलना में इसकी भाषा को अधिक संयम के साथ चलना पड़ता है । इसका परिचालन मात्र आंतरिक होने के कारण इस की पाठक संख्या सीमित है किंतु फिर भी यह पत्रिका कर्मचारियों के माध्यम से उनके परिवार , रिश्ते -नातेदारों एवं मित्रों तक अवश्य पहुंचती है जिससे इसे व्यापक फैलाव मिल ही जाता है।

राजभाषा पत्रकारिता अपने संगठन के कार्य-कलापों की सूचना देते हुए राजभाषा के प्रयोग में स्वत: विकास करती चली जाती है। तकनीकी, वैज्ञानिक शब्दावली शनै-शनै आम बोलचाल की भाषा में स्थान बना रही है। इतना ही नहीं राजभाषा पत्रकारिता मशीनरी, उपकरणों, यंत्रों, कल-पुर्जों के नामकरण में सहायक है। कहना अनुचित नहीं होगा कि राजभाषा पत्रकारिता जहां अपने संगठन का सुदृढ संचार सम्प्रेषण का आधार है वहीं दूसरी ओर भाषा के विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान देती है। राजभाषा पत्रिका की सब से महत्वपूर्ण विशेषता यह कि इसकी रचनाओं में, समाचारों में पाठक को बड़ी-बड़ी मशीनों, उपकरणों, उद्योगों की शब्दावली आसानी से प्राप्त होती है। उत्पाद, उत्पादन, निष्पादन उपभोक्ता के अलावा संगठन में स्वाभाविक रुप से चलती भाषा की भी जानकारी मिलती है। अत: राजभाषा पत्रकारिता का भाषा स्वरुप ऐसा होना चाहिए जिससे संगठन के कार्य कलापों में प्रयुक्त स्वाभाविक शब्दावली की अभिव्यक्ति हो सके; तकनीकी वैज्ञानिक एवं विभिन्न विषयों से संबंधित शब्दावली भी जुडती रहे तथा समूचे देश में यह अपने संदेश को आदर्श संचार की भूमिका में अभिव्यक्त कर सके।

तंबाकू सेवन-मौत को आमंत्रण

एस.के. सनोडिया
निजी सहायक
एनएमडीसी, मुख्यालय, हैदराबाद

आजकल युवाओं में तंबाकू सेवन का चलन बहुत तेजी से बढ़ रहा है। विश्व भर में तंबाकू के बढ़ते उपयोग और उसके स्वास्थ्य पर होने वाले दुष्प्रभाव मानव समाज के सामने बड़ी चिंता का कारण बन गए हैं। पूरे विश्व में लोगों को तंबाकू मुक्त बनाने, स्वस्थ जीवन जीने और स्वास्थ्य संबंधी खतरों से बचाने हेतु तंबाकू सेवन पर निषेध के लिए प्रयास किए जा रहे हैं, जिसके अंतर्गत समय-समय पर जागरूकता कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं और प्रत्येक वर्ष 31 मई को विश्व तंबाकू निषेध दिवस का आयोजन किया जा रहा है।

तंबाकू सेवन से जुड़ी बीमारियां यथा श्वसन तंत्र, फेफड़े आदि में कैंसर, लीवर, किडनी, अमाशय, मूत्राशय आदि में खराबी आना आदि आज मौत का प्रमुख कारण बन गए हैं। इसके सेवन से रक्तचाप के रोगियों का प्रेशर भी अनियंत्रित बना रहता है, जो कुछ समय बाद किडनी और हृदय, दोनों पर दुष्प्रभाव डालता है। इसकी भयावहता का अनुमान इस तथ्य से लगाया जा सकता है कि विश्व स्वास्थ्य संगठन की एक रिपोर्ट के अनुसार प्रति सेकेंड एक व्यक्ति की मृत्यु तंबाकू सेवन के कारण उत्पन्न बीमारियों से हो रही है। भारत में लगभग 35 प्रतिशत वयस्क धूम्रपान (तंबाकू पीना) या धूम्रमुक्त (तंबाकू खाना), किसी न किसी रूप में तंबाकू सेवन कर रहे हैं।

तंबाकू का धुआं हृदय और दिमाग की नाड़ियों पर कई तरह से दुष्प्रभाव डालता है। इससे जहां एक ओर कम आयु में ही हृदय का रोग शरीर को जकड़ लेता है और बहुत तेजी से बढ़ता है, वहीं दूसरी ओर नाड़ियों का व्यास भी घट जाता है, जिससे कम आयु में ही एंजियोप्लास्टी या बायपास करवाने की नौबत आ जाती है।

तंबाकू का जहर हर वर्ष लाखों लोगों को असमय काल के गाल में समा देता है। उम्र के 25 साल पूरे होने से पहले धुआँ उड़ाने वालों की औसत आयु 10 वर्ष तक कम हो जाती है। इसका अर्थ यह है कि 65 वर्ष तक जीने की संभावना घटकर 55 पर आ जाती है। इसका सबसे दुःखद पहलू यह है कि इससे होने वाली बीमारियां इंसान के सबसे सुनहरे वर्ष लील जाती हैं। 45 से 60 वर्ष की आयु में व्यक्ति अपने कैरियर के शिखर पर होता है और उन्हीं दिनों ये बीमारियां इंसान के ऊपर वार करती हैं।

धूम्रपान के शौकीन लोग परिवार तथा समाज के भी कसूरवार हैं। जाने-अनजाने ये लोग अपने प्रियजनों, मित्रों और आसपास रहने वाले लोगों की सांसों में तंबाकू का जहर घोल रहे होते हैं। इनके आसपास रहने वाले परिजन और मित्र आदि, जो धूम्रपान नहीं करते हैं, उनकी सांसों में भी इनके धूम्रपान के कारण धुआं जाता रहता है और वे भी तंबाकू से संबंधित रोगों से रोगग्रस्त होते रहते हैं। इस प्रकार से सांस में धुआं जाने की क्रिया को पैसिव या सेकेंड हैंड स्मोकिंग कहा जाता है। पैसिव स्मोकिंग का सबसे बुरा असर बच्चों पर पड़ता है। बच्चे वयस्कों की तुलना में अधिक बार सांस लेते हैं, फलस्वरूप सिगरेट या बीड़ी का धुआँ सांस के माध्यम से उनके शरीर से ज्यादा जाता है। इससे बच्चों में जहां तात्कालिक रूप से अस्थमा आदि की समस्या सामने आ रही है, वहीं दीर्घकालिक प्रभाव के अंतर्गत फेफड़ों की क्षमता कम होना, विकास अवरूद्ध होना, प्रतिरोधक क्षमता कम होना, कैंसर आदि की समस्याएं सामने आई हैं। गर्भधारण की अवधि में महिलाओं द्वारा धूम्रपान किए जाने से गर्भपात, बच्चे का समय पूर्व जन्म, मृत जन्म, नाल (प्लेसेंटा) में

असामान्यता, अविकसित बच्चों का जन्मे आदि समस्याएं सामने आ रही हैं।

इतिहास देखें तो पता चलता है कि तंबाकू सेवन का चलन 5000-3000 ई.पू. के प्रारंभिक काल में शुरू हुआ था। शुरू में इसे कई सभ्यताओं में सुगंध के तौर पर जलाया जाता था। बाद में इसे आनंद प्राप्त करने के लिए और फिर एक सामाजिक उपकरण के रूप में अपनाया गया। हालांकि यह पदार्थ अकसर आलोचना का शिकार बनता रहा, इसके बावजूद यह लोकप्रिय होता रहा। जर्मन वैज्ञानिकों ने वर्ष 1920 के अंत में धूम्रपान से होने वाले फेफड़े के कैंसर का पता लगा लिया था। वर्ष 1950 में धूम्रपान और कैंसर के बीच के संबंध पर पुन: चर्चा शुरू हुई और वैज्ञानिक प्रमाण वर्ष 1980 में प्राप्त हुए। परिणामस्वरूप विकसित देशों में इसकी खपत में गिरावट आनी शुरू हो गई, किंतु भारत जैसे विकासशील देशों में इसकी खपत में वृद्धि जारी रही है। अफसोस की बात है कि विदेशों में धूम्रपान की लत कम होती जा रही है और हमारे देश में यह बढ़ती जा रही है।

तंबाकू सेवन का सबसे आम तरीका धूम्रपान है जिसके अंतर्गत सिगरेट, बीड़ी या हुक्का पीना है। धूम्रमुक्त सेवन के अंतर्गत खैनी, जर्दा खाना या गुटका चबाना तथा नस से दाँत साफ करना अथवा नसवार (सुंघनी) का उपयोग करना है। धनी व्यक्ति समाज में अपने रूतबे को दिखाने के लिए सिगार या महंगे ब्रांडेड सिगरेट पीते हैं और तंबाकू युक्त पान मसाले खाते हैं, वहीं गरीब लोग बीड़ी पीते हैं और खैनी या जर्दा के रूप में तंबाकू चबाते हुए देखे जाते हैं। उक्त दोनों ही तरह से तंबाकू सेवन मानव शरीर और स्वास्थ्य के लिए समान रूप से घातक है।

युवा पुरूषों को छल्ले बनाकर सिगरेट पीते हुए महाविद्यालयों के आसपास देखा जा सकता है। यहां तक कि शहरी भद्र समाज की आधुनिक लड़कियों में भी सिगरेट पीना फैशन बनता जा रहा है। ग्रामीण इलाकों में महिलाओं में बीड़ी पीना बहुत ही सामान्य है।

तंबाकू उत्पादों में लगभग पाँच हजार जहरीले पदार्थ पाए जाते हैं, जिनमें सबसे खतरनाक घटक निकोटीन, कार्बन मोनोआक्साइड तथा टार हैं। तंबाकू में मौजूद निकोटीन का सबसे अधिक प्रभाव व्यवहार पर पड़ता है। यह नशे को पैदा करता है।

धूम्रपान में तंबाकू के कृषि उत्पाद को दूसरे योजकों के साथ मिलाया जाता है और फिर इसे सिगरेट, बीड़ी या हुक्के के रूप में सुलगाया जाता है तथा धुए या भाप को सांस के जरिए अंदर खींचा जाता है, जिसके परिणामस्वरूप उसमें उपस्थित निकोटीन फेफड़ों के माध्यम से कोशिकाओं द्वारा अवशोषित कर लिया जाता है। तत्पश्चात निकोटीन हमारी इंद्रियों (Sence Organ) और मस्तिष्क के चयापचय (Metabolism) को प्रभावित करता है। निकोटीन अधिकतर पूरे शरीर, कंकाल मांसपेशियों में वितरित होकर दुष्प्रभाव डालता है। धूम्रपान करने पर प्रारंभ में हृदय गति, स्मृति, सतर्कता और प्रतिक्रिया की अवधि बढ़ जाती है। इससे डोपामाइन और बाद में एंडोर्फिन का रिसाव होता है, जो अकसर आनंद से जुड़े हुए हैं। धूम्रपान से जुड़े अधिकांश व्यक्ति इसका सेवन किशोरावस्था या युवावस्था के आंरभ में शुरू करते हैं। आमतौर पर प्रारंभिक अवस्था में धूम्रपान सुखद अनुभूतियां प्रदान करता है तथा व्यक्ति को सकारात्मक दृष्टिकोण की ओर प्रेरित करता है, किंतु कुछ दिनों के धूम्रपान के बाद अवसाद का डर तथा नकारात्मक दृष्टिकोण उसे जारी रखने का प्रमुख उत्प्रेरक बन जाता है। धूम्रपान से कार्बन मोनो आक्साइड रक्त में लेकर जाने वाली ऑक्सीजन की मात्रा को कम कर देती है, जिससे सांस लेने में तकलीफ होनी प्रारंभ होती है। टार एक चिपचिपा अवशेष है, जिसमें बेंजोपाइरीन होता है, जो कैंसर के प्रमुख कारकों में से एक है।

विभिन्न शोधों से ज्ञात हुआ है कि बिना धुएं वाले तंबाकू पदार्थ जैसे तंबाकू की पत्ती, खैनी, पान मसाला, जर्दा या गुटका आदि में बेसिलस लिचनीफरेमिस और बेसिलस प्यूमिलस नाम के बैक्टीरिया पाए जाते हैं, जो कैंसर, फेफड़े में सूजन तथा संक्रमण, दस्त और उल्टी के खतरे को बढ़ाते

हैं। इसके अलावा ये एक धीमा जहर छोड़ते हैं जो बीमारी पैदा करता है। तंबाकू सेवन करने वाले व्यक्ति नशे के लिए इसे देर तक चबाते रहते हैं अथवा होठों एवं दाँत के बीच दबाए रहते हैं, जिससे तंबाकू में उपस्थित निकोटीन खून में पहुंच कर अपना दुष्प्रभाव डालता है। इसके अतिरिक्त देर तक तंबाकू के मुंह में रहने से संबंधित व्यक्ति उतने ही समय तक बैक्टीरिया के संपर्क में रहते हैं, जिससे कैंसर सहित विभिन्न रोगों का खतरा बढ़ जाता है।

इसके अतिरिक्त तंबाकू में पाए जाने वाले अन्य यौगिकों में कार्बन डाइऑक्साइड, नाइट्रोजन ऑक्साइड, अमोनिया, हाइड्रोजन साइनाइड, अस्थिर सल्फर युक्त यौगिक, अस्थिर हाइड्रोकार्बन, एल्कोहल, एल्डीहाइड और कीटोन शामिल है। इन यौगिकों में से कुछ यौगिक शरीर के विभिन्न अंगों में होने वाले कैंसर के प्रमुख कारण हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि तंबाकू में एक भी स्वास्थ्यवर्धक गुण नहीं है। इसके सेवन से केवल नुकसान ही नुकसान हैं। यदि तंबाकू का सेवन सभी रूपों में बंद कर दिया जाए तो इन सभी रोगों से निजात पाई जा सकती है। अत: धूम्रपान करने वाले व्यक्तियों के लिए आवश्यक है कि वे इस खतरनाक शौक या आदत से निजात पाएं और किसी भी रूप में तंबाकू सेवन न करें। बंद यानी बिलकुल बंद, न तो स्वयं सेवन करें और न ही सेवन करने वालों की संगति में रहें। पूरी तरह से छोड़ने के बाद सामान्य जीवन की ओर लौटने में 3 से 4 वर्ष का समय लग सकता है। जिसने तंबाकू की इन बुरी आदतों को छोड़ दिया वह अपनी जिंदगी के खोए हुए साल भी वापस पा सकता है और कैंसर के खौफ से भी बच सकता है।

आजकल धूम्रपान छोड़ने में व्यक्तियों की सहायता करने के लिए सरकार एवं समाजसेवी संस्थाओं द्वारा शहरों में नशामुक्ति केंद्र और डीएडिकशन क्लीनिक खोले गए हैं, जिनकी जानकारी अस्पताल, चिकित्सक तथा अन्य समाजसेवी संस्थाओं के पास रहती है। गूगल के सर्च बाक्स में "Smoking Cessation, Tobacco, Cessatoin, Quit Smoking" आदि टाइप पर इनकी जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

धूम्रपान छोड़ने के इच्छुक व्यक्तियों के लिए एक अत्यंत उपयोगी वेबसाइट है smokefree.com इस वेबसाइट में धूम्रपान त्यागने के इच्छुक व्यक्तियों के लिए विस्तृत जानकारी, सलाह और मोबाइल ऐप के बारे में जानकारी दी गई है।

वैसे तो टीवी आदि में तंबाकू के दुष्प्रभाव पर अनेकों विज्ञापन आदि दिखाए जा रहे हैं और तंबाकू के उत्पादों पर चेतावनी भी प्रदर्शित की जा रही है। इसके अतिरिक्त शहरों तथा ग्रामीण इलाकों में होर्डिंग्स में तंबाकू सेवन के दुष्प्रभाव से संबंधित विज्ञापन प्रदर्शित किए जा सकते हैं।

तंबाकू सेवन करने वाले व्यक्ति के साथ-साथ यह जिम्मेदारी उसके परिजनों, मित्रों, बुद्धिजीवियों एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं पर भी आती है कि वे उसको इस व्यसन को छोड़ने में सहायता करें। धूम्रपान के आदी व्यक्ति को आदत से मजबूर समझ कर नजरअंदाज न करें, बल्कि सलाह से, इशारों से, उदाहरणों से और चिकित्सक की सलाह से, जैसे भी संभव हो, तंबाकू सेवन को त्यागने हेतु प्रेरित करें। प्रियजनों को बुरी आदतों से बचाना और अच्छे कामों के लिए प्रेरित करना भी समाज सेवा का ही एक रूप है।

राजभाषा नियम 1976 का नियम-5

हिन्दी में प्राप्त पत्रादि के उत्तर

हिन्दी में पत्रादि के उत्तर केन्द्रीय
सरकार के कार्यालय से हिन्दी में दिए जाएंगे ।

सपनों की उड़ान

हरि कृष्ण राजपूत
प्रबंधक (यांत्रिकी)
एनएमडीसी, निस्प, नगरनार

एनएमडीसी मुख्यालय से नियुक्ति पत्र प्राप्त होने के पश्चात मुझे जानकारी प्राप्त हुई कि एनएमडीसी ने खनन क्षेत्र में राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपना वर्चस्व बनाए रखा है एवं परंपरागत खनन कार्य के अलावा कार्य में विविधता लाने के उद्देश्य से छत्तीसगढ़ के बस्तर क्षेत्र को विकास की मुख्य धारा से जोड़ने एवं वहाँ के आदिवासी बाहुल्य ग्रामीणों को सामाजिक, आर्थिक रूप से सशक्त बनाने हेतु 3 मिलियन टन की वार्षिक क्षमता वाले इस्पात संयंत्र की नगरनार में स्थापना की जा रही है। किसी के लिए भी यह गर्व का विषय होगा कि उसे ऐसी किसी सरकारी परियोजना में मील का पत्थर बनने का अवसर प्राप्त हुआ है, जिसके भूमि पूजन से लेकर उसके उत्पादन तक के सफर में वह सहभागी बन सका।

मैं बचपन एवं किशोरावस्था तक इस्पात नगरी भिलाई में रहा हूँ, अतः इस्पात संयंत्र एवं वहाँ के परिवेश से भली भांति परिचित हूँ। इस्पात नगरी अर्थात एक संक्षिप्त भारत, जहां भिन्न-भिन्न राज्यों के विभिन्न भाषा-भाषी लोग अपने खान-पान, रीति-रिवाजों में भिन्नता के बावजूद मिलजुल कर बिना किसी भेदभाव, जातिवाद, क्षेत्रीयवाद के सौहार्द पूर्ण जीवन यापन करते हैं, यहाँ की खुशहाली का मूल मंत्र है अनुशासनात्मक तरीके से संगठित एवं प्रसन्नचित्त होकर कार्य संपादित करना। संक्षेप में कहा जाए तो सादा जीवन उच्च विचार। जब कभी मैं भिलाई इस्पात संयंत्र के परिसर से गुजरता था तो देश के विख्यात व्यक्तित्व पंडित जवाहर लाल नेहरू, डॉ राजेंद्र प्रसाद एवं भिलाई इस्पात संयंत्र के अधिकारियों तथा कर्मचारियों के श्वेत श्याम चित्र मुझे यह सपना देखने को प्रेरित करते थे कि मुझे भी ऐसे ही किसी लक्ष्य का सहभागी बनने का मौका मिले। कहते हैं कि जो बड़े सपने देखने की हिम्मत रखते हैं सपने भी उन्हीं के पूरे होते हैं। संयोग की बात कहें या ईश्वर की कृपा, वर्ष 2011 में मेरी नियुक्ति एनएमडीसी नगरनार में हुई और मुझे अपने सपने को साकार करने का अवसर प्राप्त हुआ। बचपन से ही छत्तीसगढ़ में रहने के उपरांत भी बस्तर क्षेत्र में प्रथम बार जाना हो रहा था।

आगे का वृतांत जानने के पूर्व यह स्पष्ट करना चाहता हूँ कि कोई भी देश या उसका क्षेत्र पहले से ही पूर्ण रूप से विकसित नहीं होता बल्कि विकसित करना पड़ता है। विकास की यह प्रक्रिया आरोही क्रम में ही होती है, शर्त यह है कि संयम, सामंजस्यता, ईमानदारी, नेक नीयत तथा जीतने का जुनून होना चाहिए।

हमारे दल में एक साथ 64 अधिकारियों की नियुक्ति हुई। अतिथि गृह में पर्याप्त कमरे नहीं होने पर 1 से 2, 2 से 4 व्यक्तियों का एक कमरे में रहना और नए लोगों के आने की स्थिति संज्ञान में लेते हुए जल्दी से जल्दी अन्य स्थान पर कमरा किराए पर लेना, किसी अधिकारी के घर से खाने की व्यवस्था हो जाना आदि सामंजस्यता के किस्से हमेशा स्मृति पटल पर बने रहेंगे। इस संदर्भ में जगदलपुर की आम जनता का आभार व्यक्त करना चाहिए कि एनएमडीसी, हिस्सेदारों, परामर्शदाता मेकान आदि के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के आगमन को भांपते हुए उनके लिए तीव्र गति से आवासीय मकानों तथा जलपान गृह का निर्माण हुआ।

जैसा कि सभी को अपने विद्यालय, महाविद्यालय, छात्रावास या किसी संस्थान का प्रथम दिन हमेशा याद रहता है, उसी तरह मैं एनआईएसपी परियोजना में अपने पहले दिन का अनुभव सांझा करता हूँ। संयंत्र के मुख्य द्वार पर खड़े होने पर ऐसा नहीं लगता था कि अंदर कुछ होगा। चारों ओर हरे भरे पेड़-पौधे, अंदर परियोजना कार्यालय खंड 'अ' में पहले से कार्यरत सहपाठी एवं कर्मचारियों का सहयोग अतुल्य रहा, आश्रित ग्राम के कर्मचारी जो कार्यालय में पदस्थ थे उनके सहयोग से अस्थायी रूप से दोपहर के खाने की व्यवस्था हुई। नए लोगों से आत्मीयता के नए रिश्तों की शुरुआत हुई।

अगले दो दिनों के बाद रात्रि पाली में हम लोगों का नाम आया, कार्य था रात्रि सतर्कता तथा कार्यालय के दस्तावेजों तथा सामानों की सुरक्षा। समय के साथ- साथ हम लोग भू अधिग्रहण, ग्रामसभा एवं नैगम सामाजिक दायित्व के कार्य से जुड़ गए। ये भी एक नया अनुभव था यहाँ के मूल निवासियों के साथ आत्मीय संबंध बनाना उनके साथ बातचीत करके उनकी भावनाओं, अपेक्षाओं को समझना , उनकी समस्याओं को सुनकर समाधान करने की कोशिश करना। हमारे प्रधान मंत्री जी का मूल मंत्र है ''सबका साथ सबका विकास'' हम सब भी इसी दिशा में अग्रसर रहे। अंततः आज की स्थिति में यहाँ के ग्रामीणों को हम पर और हमें उन पर भरोसा हैं। हमारी प्रगति एवं उन्नति सबके साथ हैं।

इतने वर्षों पश्चात इस लेख को लिखते समय मुझे गर्व होता हैं कि मैं एनएमडीसी आयरन एवं इस्पात संयंत्र का सदस्य हूँ । मुझे एनआईएसपी के प्रत्येक व्यक्ति , यहाँ के ग्रामवासियों, ग्रामीण परिवेश , यहाँ की मिट्टी , यहाँ की हवा सभी पर गर्व है।

हमें एनएमडीसी प्रबंधन तथा अन्य परियोजनाओं के सभी सदस्यों पर पूर्णरुपेण विश्वास है कि हम पर अपना आशीर्वाद तथा विश्वास बनाये रखें। हम सभी संगठित रहकर भविष्य में राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय स्तर पर कीर्तिमान के नये आयाम स्थापित करेंगे। अंत में इसी उत्साह के साथ श्री हरिवंशराय बच्चन की चंद पंक्तियों के साथ अपनी कलम को विराम देता हूँ,

लहरों से डर कर नौका पार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।

नन्हीं चींटी जब दाना लेकर चलती है,
चढ़ती दीवारों पर, सौ बार फिसलती है।

मन का विश्वास रगों में साहस भरता है,
चढ़कर गिरना, गिरकर चढ़ना न अखरता है।

आख़िर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।

बसंत है

संगीता चंदेल
सहायक
एनएमडीसी, निस्प, नगरनार

आया बसंत है।
छाया बसंत है।
प्रकृति के कण-कण में
जीवन के अंग-अंग में
समाया बसंत है।
बसंत ही बसंत है।

''प्रेम की बरसती धारों में
जब खिलता जीवन के शैशव का 'बसंत'
मौजों की टोली में उपजता
फड़कता, अल्हड़ता का बसंत है।
''प्रेम की रिम-झिम फुहारों में
जब पलता जीवन के यौवन का 'बसंत'
रोम-रोम में ऊर्जा, क्रियाशीलता
मदहोशी के आगोश में पनपता
जागृत समर्पण का बसंत है॥
''प्रेम की शिथिल बयारों में
जब धुलता जीवन के विश्रांति का 'बसंत'
अनुभव में सम्पूर्णता, सम्पन्नता
विरक्ति के भाव में पनपता
त्याग की बासंती छटा का बसंत है।

आया बसंत है।
छाया बसंत है।
प्रकृति के कण-कण में
जीवन के अंग-अंग में
समाया बसंत है।
बसंत ही बसंत है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता

के. पार्वती श्रीनिवास
निजी सहायक
एनएमडीसी, मुख्यालय, हैदराबाद

कृत्रिम बुद्धिमत्ता अर्थात आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस दो शब्दों से मिलकर बना है।

आर्टिफिशियल का अर्थ है एक ऐसी वस्तु जो प्राकृतिक न होकर मानव द्वारा बनाई गई हो।

इंटेलिजेंस का अर्थ है सोचने, समझने एवं सीखने की योग्यता।

संक्षिप्त शब्दों में इसे एआई भी कह सकते हैं फेसबुक में फ्रेन्ड सजेशन का जो ऑप्शन है वह एआई का ही एक रुप है। अत: हम कह सकते हैं कि कृत्रिम तरीके से विकसित की गई बौद्धिक क्षमता ही आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता का आरंभ 1950 के दशक में हुआ । यह कम्प्यूटर और कम्प्यूटर प्रोग्रामों को उन्हीं तर्कों के आधार पर चलाने का प्रयास है जिसके आधार पर मानव मस्तिष्क चलते हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता में कम्प्यूटर अपने-आप तय कर पाता है कि उसकी अगली गतिविधि क्या होगी।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) को चार भागों में विभाजित गया है।

1. इंसान की तरह सोचना
2. इंसान की तरह व्यवहार करना
3. तर्क एवं विचार युक्त होना
4. तथ्यों को समझना और तर्क एवं विचारों पर अपनी प्रतिक्रिया भी देना

कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने मानवीय कार्य को काफी सुविधाजनक बना दिया है। सैकड़ों मानव मस्तिष्कों की क्षमता वाला कार्य एआई द्वारा मात्र एक ही कम्प्यूटर सुलभ कर सकता है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के प्रमुख अनुप्रयोग

1. कंप्यूटर खेल
2. नेचुरल लैंग्वेज
3. एक्सपर्ट सिस्टम
4. कंप्यूटर विजन
5. स्पीच रिकग्नीशन
6. हैंड राइटिंग आइडेंटीफिकेशन
7. रोबोटिक्स

1. कंप्यूटर खेल - कृत्रिम बुद्धिमत्ता रणनीति वाले खेलों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है जैसे कि शतरंज, पोकर, टिक टैक टौ आदि। जहां मशीन अनेक संभावित स्थितियों के बारे में अनुमान लगा सकती है।

2. नेचुरल लैंग्वेज - कंप्यूटर के साथ बातचीत करना संभव है जो मनुष्य के द्वारा बोली जाने वाली प्राकृतिक/स्वाभाविक भाषा समझता है।

3. एक्सपर्ट सिस्टम - यहां कुछ अनुप्रयोग हैं जो कि मशीन, सॉफ्टवेयर और विशेष जानकारी को एकीकृत कर तर्क और सलाह प्रस्तुत कर सकते हैं।

4. कंप्यूटर विजन - यह सिस्टम कंप्यूटर पर दृश्य इनपुट को समझ कर उसकी व्याख्या कर सकता है। उदाहरण के लिए एक जासूसी हवाई जहाज या कृत्रिम उपग्रह आसमान से फोटो खींचता है, जिनका उपयोग स्थानीय जानकारी लेने और क्षेत्र के नक्शे बनाने में किया जाता है।

5. स्पीच रिकग्नीशन-कुछ बुद्धिमान प्रणालियाँ वाक्यों को सुनने और उनके अर्थ समझने में सक्षम हैं, मनुष्य जब उनसे संवाद करता है तो वह भिन्न लहजों, खिचड़ी शब्दों, पृष्ठभूमि के शोर, मनुष्य की आवाज में बदलाव आदि को भी पहचान सकती हैं।

6. हैंड राइटिंग आइडेंटीफिकेशन - हस्तलेख पहचान सॉफ्टवेयर द्वारा पेन से कागज पर लिखे या स्टाईलस द्वारा स्क्रीन पर लिखे शब्दों को पढ़ा जा सकता है। यह अक्षरों की आकृति को पहचान कर उन्हें संपादन योग्य पाठ में तब्दील कर सकता है।

7. रोबोटिक्स-रोबोट मानव द्वारा दिए गए कार्य करने मे सक्षम है। उसके पास वास्तविक दुनिया से भौतिक डाटा जैसे कि प्रकाश, गर्मी, तापमान, गति, ध्वनि, विक्षेप, और दबाव का अनुमान लगाने के लिए सेंसर है। उसके पास कुशल प्रोसेसर और विशाल मेमोरी होती है। डॉक्टर क्लीनिकल एक्सपर्ट सिस्टम का उपयोग मरीज की बीमारी जानने में करते हैं। फोरेंसिक कला द्वारा बनाए गए चित्रों से पुलिस कंप्यूटर सॉफटवेयर का उपयोग कर अपराधी के चेहरे की पहचान कर सकती है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के लाभ:

1. आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस त्रुटियों को कम करने में मदद करता है जिससे अधिक सटीकता हासिल करने की संभावना बढ़ जाती है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का प्रयोग अंतरिक्ष विज्ञान में भी किया जाता है। इंटेलिजेंट रोबोट में सूचना भर दी जाती है और उसे अंतरिक्ष को एक्सप्लोर करने के लिए भेजा जाता है।

2. आर्टिफिसियल इंटेलिजेंस का उपयोग कर तेजी से निर्णय लेने और त्वरित कार्रवाई करने में सहायता मिल सकती है।

3. आर्टिफिसियल इंटेलिजेंस का उपयोग माइनिंग और अन्य अन्वेषण प्रक्रियाओं में किया जाता है। इतना ही नहीं, इसका उपयोग समुद्र के तल की खोज के लिए भी किया जा सकता है ।

4. आटोमेडेट तर्क, लर्निंग और परसेप्शन के लिए कंप्यूटेड प्रणाली हमारे रोजमर्रा के जीवन में एक सामान्य घटना बन गई है। विंडोज 10 में कोरटाना या सिरी हमेशा मदद करने के लिए तैयार है। हम जीपीएस की मदद से लंबी ड्राइविंग और ट्रैवल के लिए रोड मैप भी देख सकते हैं।

5. दोहराए जाने वाले कामों को मशीन इंटेलिजेंस से किया जा सकता है, जो मानव नहीं कर पाते। मशीन मनुष्य से तेज तथा मल्टीटास्किंग होती है। खतरनाक कार्य करने के लिए मशीन इंटेलिजेंस को नियोजित किया जा सकता हैं । उनके पैरामीटर, इंसानों के विपरीत एडजस्ट किये जा सकते हैं। उनकी स्पीड और समय केवल मानदण्ड पर आधारित है।

7. मनुष्यों के विपरीत मशीनों को आराम और विराम की आवश्यकता नहीं होती है। वे लंबे घंटों के लिए प्रोग्राम की जाती हैं और न तो ऊबती हैं न ही थकती हैं।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता से हानि:

1. आर्टिफिसियल इंटेलिजेंस के निर्माण के लिए भारी लागत की आवश्यकता होती हैं क्योंकि वे बहुत ही कॉम्प्लेक्स मशीने होती हैं। उनकी मरम्मत और रखरखाव के लिए भारी लागत की आवश्यकता होती है।

2. इसमें कोई संदेह नहीं है कि आर्टिफिसियल इंटेलिजेंस से नौकरियों में कमी आ सकती है। रोबोटों ने पहले से ही असेंबली लाइन पर कई नौकरियां छीन ली हैं। यह समस्या अब बढ़ सकती है । उदाहरण के लिए, ड्राइवरलेस कारों की संकल्पना, जो लाखों मानव ड्राइवरों का स्थान ले सकती है।

उपसंहार

इंसानों जैसी दिखने वाली रोबोट सोफिया 19 से 21 फरवरी, 2018 के बीच हैदराबाद में संपन्न हुई वर्ल्ड कांग्रेस ऑन इंफारमेशन टेक्नोलॉजी में पहुंची। सोफिया को सऊदी अरब की नागरिकता भी मिली हैं और वे पहली रोबोट हैं, जिसे किसी देश की नागरिकता मिली है। सोफिया रोबोट को डेविड हैनसन ने बनाया है।

इस कान्फ्रेंस में कुछ प्रश्नों के उत्तर देते हुए सोफिया ने कहा कि वह हांगकांग में अपनी रोबोटिक फैमिली और क्रिएटर हेंसन के साथ रहना चाहती है। सोफिया को हॉलीवुड अभिनेत्री हेपबर्न की तरह दिखने वाला बनाया गया है। प्रेजेंटेशन के दौरान साफिया ने आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस एवं रोबोट्स के इंसानों के वजूद के लिए खतरा बनने से जुड़ी चिंताओं पर भी बात की। अंतत: यह कहा जा सकता है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता विज्ञान की एक नवीन चमत्कारी देन है।

नवरत्न एनएमडीसी की फौलादी उड़ान

ओम प्रकाश साहू
वरिष्ठ प्रबंधक (यांत्रिक)
एनएमडीसी, जी.ई.सी, रायपुर

क्यों न हम सब खुशी मनायें,
आज 'हीरक बेला' है।
कर्म-भूमि के तीर्थ-स्थल पर,
यह अनुपम मेला है॥
करें प्रतिज्ञा इस अवसर पर,
नए लक्ष्य-संधान की॥
आओ मिलकर करें साधना
हम गरिमामय उत्थान की।
आज लौह अयस्क खान,
बना श्रम वीरों का धाम,
जहाँ निरंतर ढले स्वेद-कण,
करें राष्ट्र-निर्माण॥
हीरक जयंती है प्रतीक,
उन श्रम वीरों के मान की,
करें प्रतिज्ञा इस अवसर पर,
नए लक्ष्य-संधान की॥
नवरत्न एनएमडीसी में हर दिवस
उपलब्धि का अध्याय है।
लक्ष्य प्राप्ति की सफलता
संकल्प से सिद्धि का पर्याय है॥
हाई ग्रेड पैलेट परीक्षण सफलता का मंत्र है।
आयरन ओर एनएमडीसी का सर्व गुण संपन्न है।
जिसके बल पर टिकी है स्थापना स्टील प्लांट की,
स्लरी-पाइप लाइन और विंड-मिल है, पंख फौलादी उड़ान की॥
मेक इन इंडिया हकीकत है मेरे हिंदुस्तान की
आवश्यकता नहीं है , प्रत्यक्ष को प्रमाण की॥
क्यों न हम सब खुशी मनाये...
साधनों का इष्टतम दोहन, लागत पर नियंत्रण
बढ़ रही है लाभ की दर, बढ़ रहा व्यापार है।
निर्यात के प्रवाह की, आई-टी के उत्कृष्टतम प्रयोग की।
डिजिटल-इंडिया के मिशन में,
क्यों न हम सब खुशी मनायें...॥
जीरो वेस्ट माइनिंग पर है हमारी नजर।
पर्या-हितैषी टिकाऊ विकास है हमारी डगर॥
सीएसआर में नहीं रखते कोई कोर कसर
आदिवासी बेल्ट में एनएमडीसी का नि:स्वार्थ प्रयास है।
सही मायने में यही तो सबका साथ सबका विकास है।
नए प्रतिमान बनाने में एनएमडीसी एक मिसाल है।
आवश्यकता है नहीं, प्रत्यक्ष को प्रमाण की॥
क्यों न हम सब खुशी मनायें...
एनएमडीसी में राजभाषा प्रगति का विस्तार है।
राजभाषा-शील्ड हमने जीती बारंबार है।
उत्पादन का शंखनाद है, बड़ी वृद्धि संधान है।
प्रखर मेधा-पुंज है यह, कुशल नेतृत्व वरदान है।
एनएमडीसी सकल विश्व में उत्तम खनन की पहचान है।
करें प्रतिज्ञा इन अवसर पर, नए लक्ष्य-संधान की।
क्यों न हम सब खुशी मनाएं, आज हीरक बेला है।
कर्म-भूमि के तीर्थ-स्थल पर, यह अनुपम मेला है।।

राजभाषा गतिविधियां - एनएमडीसी मुख्यालय

राजभाषा अधिकारियों की अखिल भारतीय संगोष्ठी का आयोजन

एनएमडीसी लिमिटेड के मुख्यालय, हैदराबाद में दिनांक 27 फरवरी 2018 को 'राजभाषा अधिकारियों की अखिल भारतीय संगोष्ठी' का आयोजन किया गया जिसमें इस्पात मंत्रालय के नियंत्रणाधीन देश भर के उपक्रमों के राजभाषा अधिकारियों, हैदराबाद-सिकन्दराबाद में स्थित केंद्रीय सरकार के उपक्रमों के राजभाषा अधिकारियों एवं देश के विभिन्न भागों में स्थित एनएमडीसी की सभी परियोजनाओं तथा क्षेत्रीय कार्यालयों के राजभाषा अधिकारियों ने भाग लिया।

संगोष्ठी का उद्घाटन श्री टी. श्रीनिवास, संयुक्त सचिव, भारत सरकार, इस्पात मंत्रालय तथा श्री संदीप तुला, निदेशक (कार्मिक), एनएमडीसी लिमिटेड, हैदराबाद ने दीप प्रज्वलित कर किया। इस अवसर पर इस्पात मंत्रालय के संयुक्त निदेशक (राजभाषा) श्री आनंद कुमार तथा सहायक निदेशक (राजभाषा) श्रीमती आस्था जैन भी उपस्थित थीं।

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में निदेशक (कार्मिक) श्री संदीप तुला ने सभी राजभाषा अधिकारियों को शुभकामनाएं देते हुए आग्रह किया कि राजभाषा हिंदी की प्रगति के लिए उसके स्वरूप पर सकारात्मक चर्चा की आवश्यकता है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि राजभाषा अधिकारियों की इस संगोष्ठी में कार्यालयीन हिंदी के स्वरुप पर सार्थक चर्चा होगी ताकि राजभाषा के वर्तमान स्वरुप को सुसंगत बनाया जा सके तथा भाषा के भविष्य को भी ऐसा रूप दिया जा सके जो सर्वमान्य हो।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि भारत सरकार, इस्पात मंत्रालय के संयुक्त सचिव श्री टी. श्रीनिवास ने अपने संदेश में कहा कि इस्पात मंत्रालय के विभिन्न उपक्रमों में राजभाषा प्रयोग में निरंतर वृद्धि हो रही है। उन्होंने कहा कि हैदराबाद में स्थित उपक्रमों में भी राजभाषा का प्रयोग सराहनीय रूप से किया जा रहा है। उनका मत था कि राजभाषा के प्रयोग में हमें प्रचलित शब्दों को यथावत रूप में अपनाना लाभकारी रहेगा, क्योंकि इससे राजभाषा का प्रयोग तेजी से बढ़ाया जा सकता है ।

संगोष्ठी में बीडीएल के श्री होमनिधि शर्मा, उ.म.प्र एवं डॉ. शिवकोटि, स.प्र.; राष्ट्रीय इस्पात निगम, वैजाग के श्री ललन कुमार, उ.म.प्र. एवं डॉ. हेमावती, प्रबंधक; श्रीमती शुष्मिणी श्रीवास्तव, व.प्र., एअर इंडिया; श्री छगनलाल नागवंशी, प्रबंधक, एफएसएनएल, भिलाई; श्री राजनारायण अवस्थी, हिंदी अधिकारी, ईसीआईएल; डॉ. बालाजी, स.प्र., मिधानी; श्री मंगल स्वरूप त्रिवेदी, व.रा.अ., बीएचईएल; सुश्री दिव्या एवं श्री सुरेश कुमार, हिंदी अधिकारी, बीईएल; श्री राहुल कुमार मौर्य, प्रबंधक, एनआईएसपी; श्री एमकेएस खादरी, स.प्र., एसआईयू; पालोंचा; श्री देवाशीष घोष, स.प्र., डीएमपी, पन्ना; एनएमडीसी मुख्यालय के श्री रुद्र नाथ मिश्र, स.म.प्र., श्रीमती सुजाता, व.प्र., डॉ. रजिन्दर कौर, स.प्र. ने अपने-अपने आलेख प्रस्तुत किए। प्रथम सत्र का विषय-प्रवर्तन इस्पात मंत्रालय, भारत सरकार के संयुक्त निदेशक (राजभाषा) श्री आनंद कुमार तथा द्वितीय सत्र का विषय प्रवर्तन सहायक निदेशक (राजभाषा) श्रीमती आस्था जैन ने किया।

राजभाषा गतिविधियां - एनएमडीसी मुख्यालय

श्री संदीप तुला, निदेशक (कार्मिक) के साथ पारंगत परीक्षा उत्तीर्ण कार्मिक

हिन्दी पारंगत प्रशिक्षण के नए सत्र का प्रारंभ

एनएमडीसी लिमिटेड, हैदराबाद में दिनांक 23-01-2018 को हिन्दी पारंगत प्रशिक्षण कार्यक्रम के तीसरे बैच का शुभारंभ किया गया। इस बैच में विभिन्न विभागों के कर्मचारियों को नामित किया गया। श्री टी राजा, महाप्रबंधक (कार्मिक) ने इस प्रशिक्षण का शुभारंभ करते हुए कहा कि यह बेहद गर्व का विषय है कि इस प्रशिक्षण में निगम के सभी कर्मचारियों को सम्मिलित किया जा रहा है जिसके परिणामस्वरुप शीघ्र ही निगम के सभी विभाग कार्यालयीन कार्य हिन्दी में कर सकेंगे। उन्होंने पारंगत के तीसरे बैच के सभी प्रशिक्षणार्थियों को शुभकामनाएं देते हुए उनका उत्साह वर्धन किया तथा प्रशिक्षण के माध्यम से हिन्दी कार्यान्वयन के क्षेत्र में किए जा रहे प्रयासों की प्रशंसा की। श्री टी राजा, महाप्रबंधक (कार्मिक) ने कहा कि एनएमडीसी पहले ही राजभाषा कार्यान्वयन में अग्रणी है। अत: हिन्दी पारंगत की नियमित कक्षाएं इस दिशा में अत्यधिक सहयोगी सिद्ध होंगी।

राजभाषा विभाग की वरिष्ठ प्रबंधक श्रीमती जी सुजाता ने उपस्थित सभी का स्वागत किया और बताया कि पारंगत प्रशिक्षण की कक्षाएं सप्ताह में दो कार्य दिवसों में लगातार मई माह तक चलाई जाएंगी। हिन्दी शिक्षण योजना के प्राध्यापक मो. कमालुद्दीन ने इस बैच के उद्घाटन सत्र में विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कक्षा आरंभ की तथा विषय प्रवेश करते हुए पाठयपुस्तकों एवं पाठयक्रम की जानकारी प्रदान की।

हिन्दी कार्यशाला का आयोजन

एनएमडीसी मुख्यालय एवं इसके क्षेत्रीय कार्यालयों के लिए हैदराबाद में दिनांक 28 नवंबर 2017 को एक दिवसीय विशेष हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह कार्यशाला राजभाषा नीति, कम्प्यूटर में यूनीकोड का प्रयोग करते हुए हिन्दी में पत्राचार करने, टिप्पणी, शब्दावली एवं हिंदी वर्तनी का अभ्यास कराने के उद्देश्य से आयोजित की गई।

कार्यशाला का उद्घाटन श्री प्रवीण कुमार, संयुक्त महाप्रबंधक (विधि) ने किया। उन्होंने राजभाषा प्रयोग के क्षेत्र में एनएमडीसी की उपलब्धियों तथा प्रगति के लिए किए जा रहे प्रयासों की जानकारी दी। उन्होंने सभी कार्मिकों से अपना अधिकतम काम हिंदी में करने की अपील की।

एनएमडीसी मुख्यालय के राजभाषा विभाग के विभागाध्यक्ष श्री आर.एन. मिश्र, सहायक महाप्रबंधक ने राजभाषा हिंदी की संवैधानिक स्थिति, राजभाषा नीति एवं वार्षिक कार्यक्रम की जानकारी देते हुए कार्यशाला के उद्देश्य पर प्रकाश डाला। कार्यशाला में मुख्यालय के कार्मिक, वित्त, इस्पात समूह, परियोजना, संसाधन योजना, अभियांत्रिकी, वाणिज्य, सामग्री प्रबंधन, कंप्यूटर एवं सूचना प्रौद्योगिकी, नैसादा विभागों तथा दिल्ली एवं विशाखापट्टनम क्षेत्रीय कार्यालयों के कार्मिकों ने भाग लिया।

कार्यशाला में अतिथि संकाय श्री अविनाश कुमार दास, वरिष्ठ सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा), एअर इंडिया, हैदराबाद ने उपक्रमों में राजभाषा प्रयोग पर सत्र लिया। द्वितीय सत्र में श्री कमालुद्दीन, हिंदी प्राध्यापक, हिंदी शिक्षण योजना, हैदराबाद ने प्रतिभागियों को हिंदी वर्तनी, वाक्यांश तथा पारिभाषिक शब्दावली की जानकारी दी । श्रीमती जी. सुजाता, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) ने यूनीकोड तथा फोनोटिक की-बोर्ड के संबंध में जानकारी देते हुए अभ्यास कराया।

कार्यशाला के सफल आयोजन में श्री राजेश कुमार गोंड, प्रबंधक (राजभाषा) एवं श्री एस. के. सनोडिया, निजी सहायक का विशेष सहयोग रहा।

राजभाषा गतिविधियां - एनएमडीसी मुख्यालय

नराकास (उपक्रम), हैदराबाद-सिकन्दराबाद के तत्वावधान में एनएमडीसी लिमिटेड में ''संयुक्त हिन्दी कार्यशाला'' का आयोजन

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), हैदराबाद-सिकंदराबाद के तत्वावधान में दिनांक 06 अक्तूबर 2017 को एनएमडीसी लिमिटेड के मुख्यालय में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के छोटे सदस्य कार्यालयों के कार्मिकों के लिए एक दिवसीय संयुक्त हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया।

कार्यशाला का उद्घाटन निगम के महाप्रबंधक (संविदा) श्री ई.आर. श्रीकुमार ने किया। उन्होंने अपने उद्घाटन संबोधन में सरकारी कार्यालयों में राजभाषा प्रयोग के महत्व के विषय में बताया। उन्होंने नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति को राजभाषा कीर्ति पुरस्कार प्राप्त होने पर बधाई दी तथा सभी सदस्य कार्यालयों द्वारा इस दिशा में किए गए योगदान की सराहना की। उन्होंने एनएमडीसी द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में किए जा रहे प्रयासों के बारे में भी जानकारी दी।

इसके पूर्व एनएमडीसी मुख्यालय के राजभाषा विभाग के विभागाध्यक्ष श्री आर.एन.मिश्र, सहायक महाप्रबंधक ने मुख्य अतिथि, नराकास के सदस्य-सचिव एवं सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया तथा एनएमडीसी लिमिटेड को संयुक्त कार्यशाला के आयोजन की जिम्मेदारी देने लिए नराकास का आभार व्यक्त किया। उन्होंने विभिन्न उपक्रमों से आये अधिकारियों को राजभाषा कार्यान्वयन में एनएमडीसी की ओर से यथासंभव सहायता देने का आश्वासन दिया।

कार्यशाला में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य सचिव श्री होमनिधि शर्मा, उप महाप्रबंधक, बीडीएल, हैदराबाद ने कार्यशाला के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए कार्यशाला के आयोजन के लिए एनएमडीसी लिमिटेड को धन्यवाद दिया। तत्पश्चात उन्होंने कम्प्यूटर पर यूनीकोड के माध्यम से राजभाषा के प्रयोग पर प्रकाश डाला।

कार्यशाला में अतिथि संकाय मो. कमालुद्दीन, प्राध्यापक, हिंदी शिक्षण योजना, हैदराबाद ने 'शब्दावली, वर्तनी एवं हिंदी में टिप्पणी लेखन' विषय पर सत्र लिया एवं अभ्यास कराया।

अंतिम सत्र में एनएमडीसी राजभाषा विभाग, मुख्यालय के अधिकारियों श्रीमती जी. सुजाता वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा), श्री राजेश कुमार गोंड, प्रबंधक (राजभाषा), डॉ. (श्रीमती) रजिन्दर कौर, सहायक प्रबंधक (राजभाषा) एवं श्री एस. के. सनोडिया निजी सहायक के साथ प्रतिभागियों की सामूहिक चर्चा हुई, जिसमें प्रतिभागियों की समस्याओं और जिज्ञासाओं का समाधान किया गया। कार्यशाला के सफल आयोजन में सुश्री अनुषा, प्रशिक्षु का विशेष सहयोग रहा।

राजभाषा गतिविधियां - एनएमडीसी मुख्यालय

विशेष हिन्दी कार्यशाला का आयोजन

मुख्यालय, हैदराबाद में दिनांक 19 जनवरी 2018 को मुख्यालय तथा अनुसंधान एवं विकास केंद्र के विभागाध्यक्षों एवं उच्चाधिकारियों के लिए विशेष हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया।

कार्यशाला का उद्घाटन श्री टी.एन.एस. कुमार, महाप्रबंधक (अभियांत्रिकी) ने किया। उन्होंने राजभाषा प्रयोग के क्षेत्र में एनएमडीसी द्वारा किए जा रहे प्रयासों एवं प्राप्त उपलब्धियों के बारे में जानकारी देते हुए सभी अधिकारियों से अपना अधिकतम काम हिंदी में करने की अपील की।

इसके पूर्व श्रीमती सुजाता, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) ने मुख्य अतिथि श्री टी.एन.एस. कुमार, महाप्रबंधक (अभियांत्रिकी) को हिंदी पुस्तक भेंट कर उनका स्वागत किया तथा एनएमडीसी मुख्यालय के राजभाषा विभाग के विभागाध्यक्ष श्री आर.एन.मिश्र, सहायक महाप्रबंधक ने हिंदी पुस्तक एवं बुके भेंट कर श्री आनंद कुमार, संयुक्त निदेशक (राजभाषा), इस्पात मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली का स्वागत किया। श्री मिश्रा ने कार्यशाला में भाग लेने आए सभी उपस्थित उच्चाधिकारियों का स्वागत करते हुए संयुक्त निदेशक (राजभाषा), इस्पात मंत्रालय का परिचय कराया। इस कार्यशाला में मुख्यालय के कार्मिक, वित्त, इस्पात समूह, बोर्ड एवं कंपनी मामले, अभियांत्रिकी, सामग्री, नैसादा, कंप्यूटर एवं सूचना प्रौद्योगिकी, बीडी एवं सीपी, सतर्कता, वाणिज्य, मा.सं.वि. तथा अनुसंधान एवं विकास केंद्र के उच्चाधिकारियों ने भाग लिया।

इस विशेष कार्यशाला में प्रमुख वक्ता के रूप में पधारे इस्पात मंत्रालय, भारत सरकार के संयुक्त निदेशक (राजभाषा) श्री आनंद कुमार ने उपस्थित अधिकारियों को राजभाषा नीति, भारत सरकार की राजभाषा संबंधी अपेक्षाओं, विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं एव विश्व में राजभाषा हिंदी की वर्तमान स्थिति के बारे में बताया। उन्होंने दैनिक कार्यालयीन कार्यों में आने वाली कठिनाइयों के संबंध में जानकारी ली तथा उनके निराकरण के बारे में प्रतिभागियों के साथ चर्चा की।

कार्यशाला के चर्चा सत्र में श्री राजेश कुमार गोंड, प्रबंधक (राजभाषा), डॉ. रजिन्दर कौर, सहायक प्रबंधक (राजभाषा) एवं श्री एस.के. सनोडिया, निजी सहायक ने सक्रिय प्रतिभागिता की।

राजभाषा गतिविधियां

इस्पात मंत्रालय द्वारा विशाखापट्टनम कार्यालय का राजभाषा संबंधी निरीक्षण

इस्पात मंत्रालय के संयुक्त निदेशक (राजभाषा) श्री आनंद कुमार ने दिनांक 23-01-2018 को क्षेत्रीय कार्यालय, विशाखापट्टनम का राजभाषा विषयक निरीक्षण किया। संयुक्त निदेशक ने क्षेत्रीय प्रमुख श्री निरंजन नायक तथा कार्यालय के राजभाषा नोडल अधिकारी श्री अरुणल राजा से राजभाषा कार्यांवयन पर विस्तार से चर्चा की। निरीक्षण अधिकारी ने राजभाषा कार्यांवयन की स्थिति की सराहना की। उन्होंने कार्यालय के सभी कार्मिकों से मिलकर उनका उत्साहवर्धन किया। निरीक्षण के अवसर पर कार्यालय द्वारा राजभाषा में किए जा रहे कार्यों की प्रदर्शनी भी लगाई गई। निरीक्षण के दौरान मुख्यालय के प्रतिनिधि के रूप में श्री रुद्रनाथ मिश्र, सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा) उपस्थित रहे।

इस्पात मंत्रालय द्वारा जीईसी, रायपुर का निरीक्षण

निरीक्षण के अवसर पर उपस्थित श्री आनंद कुमार, संयुक्त निदेशक (रा.भा.) इस्पात मंत्रालय; श्री राजीव शर्मा, प्रमुख, जीआईसी, रायपुर तथा अन्य अधिकारीगण

इस्पात मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा 21 नवंबर 2017 को जीईसी, रायपुर का राजभाषा निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान मुख्यालय का प्रतिनिधित्व श्रीमती जी सुजाता, वरिष्ठ प्रबंधक (रा.भा.) ने किया।

निरीक्षण के दौरान मंत्रालय के संयुक्त निदेशक (रा.भा.) ने रायपुर कार्यालय के सभी स्टाफ सदस्यों से विचार-विमर्श किया तथा राजभाषा कार्यान्वयन में प्रगति के लिए सुझाव दिए।

राजभाषा गतिविधियां - बैलाडीला लौह अयस्क खान, किरन्दुल

हिंदी दिवस व पखवाड़ा, 2017 समापन समारोह

विश्व हिंदी दिवस, 2018 के उपलक्ष्य में आयोजित हिंदी गीत गायन प्रतियोगिता

राजभाषा मासिक कार्यक्रम के अंतर्गत आयोजित लिखित प्रतियोगिता

राजभाषा गतिविधियां - दोणिमलै लौह अयस्क परियोजना

परियोजना में 30-12-17 को आयोजित निबंध प्रतियोगिता

दिनांक 23-02-18 को आयोजित हिन्दी टाइपलेखन प्रतियोगिता

केंद्रीय विद्यालय के विद्यार्थियों हेतु निबंध प्रतियोगिता

गृहिणियों हेतु निबंध प्रतियोगिता

राजभाषा अधिनियम की धारा -4

जिस तारीख को धारा 3 प्रवृत्त होती है उससे दस वर्ष की समाप्ति के पश्चात, राजभाषा के सम्बन्ध में एक समिति, इस विषय का संकल्प संसद के किसी भी सदन में राष्ट्रपति की पूर्व मंजूरी से प्रस्तावित और दोनों सदनों द्वारा पारित किए जाने पर, गठित की जाएगी।

इस समिति में तीस सदस्य होंगे जिनमें से बीस लोक सभा के सदस्य होंगे तथा दस राज्य सभा के सदस्य होंगे, जो क्रमशः लोक सभा के सदस्यों तथा राज्य सभा के सदस्यों द्वारा आनुपातिक प्रतिनिधित्व पद्धति के अनुसार एकल संक्रमणीय मत द्वारा निर्वाचित होंगे।

इस समिति का कर्तव्य होगा कि वह संघ के राजकीय प्रयोजनों के लिए हिन्दी के प्रयोग में की गई प्रगति का पुनर्विलोकन करें और उस पर सिफारिशें करते हुए राष्ट्रपति को प्रतिवेदन करें।

राष्ट्रपति उपधारा (3) में निर्दिष्ट प्रतिवेदन पर और उस पर राज्य सरकारों ने यदि कोई मत अभिव्यक्त किए हों तो उन पर विचार करने के पश्चात् उस समस्त प्रतिवेदन के या उसके किसी भाग के अनुसार निदेश निकाल सकेगा :परन्तु इस प्रकार निकाले गए निदेश धारा 3 के उपबन्धों से असंगत नहीं होंगे।

राजभाषा गतिविधियां - हीरा खनन परियोजना, पन्ना

दिनांक 30 दिसम्बर, 2017 को परियोजना के प्रशासनिक भवन, सम्मेलन कक्ष में कर्मचारियों के लिए हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग से संबंधित केंद्र सरकार की राजभाषा नीति, वार्षिक कार्यक्रम और कार्यालयीन कार्य में हिन्दी के उत्तरोत्तर विकास और प्रयोग को बढ़ाने के लिए समय-समय पर सरकार द्वारा जारी दिशा-निर्देशों पर विस्तार से चर्चा की गई। उप महाप्रबंधक (कार्मिक) एवं सर्व कार्यभारी अधिकारी (राजभाषा) श्री बी.के. माधव ने कार्यालयीन कामकाज में हिन्दी भाषा की शैली पर प्रकाश डालते हुए इसके सहज और सरल प्रयोग पर बल दिया।

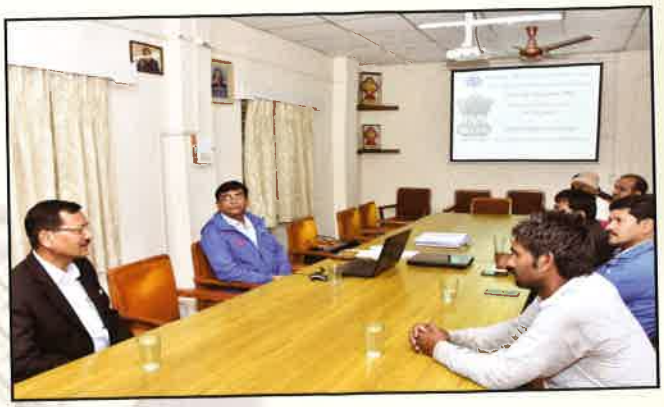

कार्यशाला में कर्मचारियों से पारस्परिक विचार-विमर्श करते हुए उप महाप्रबंधक (कार्मिक) श्री बी.के. माधव

विश्व हिंदी दिवस पर परियोजना में आयोजित हुई काव्य गोष्ठी

वर्ष 2006 में भारत सरकार द्वारा प्रतिवर्ष 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस मनाने के संबंध में लिए गए निर्णय के अनुपालन में दिनांक 10 जनवरी, 2018 को पन्ना परियोजना में विश्व हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर एक काव्य गोष्ठी आयोजित की गई जिसमें परियोजना के अधिकारी एवं कर्मचारीगण, केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल के जवान और डी.ए.व्ही. पब्लिक स्कूल, मझगवां के शिक्षकवृंद भी सम्मिलित हुए।

परियोजना के कार्मिक विभाग द्वारा आयोजित इस काव्यगोष्ठी में वक्ताओं ने स्वरचित कविता सुनाकर सभी को मंत्रमुग्ध किया ।

विश्व हिंदी दिवस पर आयोजित काव्य गोष्ठी में सहभागिता करते कर्मचारीवृंद

राजभाषा गतिविधियां - एसआईयू, पालोंचा

दिनांक 21-12-2017 को श्री एस.के. शर्मा, परियोजना प्रबंधक, एनएमडीसी लिमिटेड, एस.आई.यू., पालोंचा की अध्यक्षता में संपन्न राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का दृश्य

दिनांक 25-10-2017 को एनएमडीसी लिमिटेड, एस.आई.यू., पालोंचा में सम्पन्न हिन्दी कार्यशाला में उपस्थित कर्मचारियों को संबोधित करते हुए श्री तनवीर जावेद, वरिष्ठ प्रबंधक (कार्मिक)

दिनांक 20.01.2018 को एनएमडीसी लिमिटेड, एस.आई.यू., पालोंचा में कर्मचारियों के लिए तथा दिनांक 22.01.2018 को न्यू इंदिरा प्रियदर्शिनी स्कूल, सिल कैंपस, पालोंचा के विद्यार्थियों के लिए संपन्न हिन्दी प्रतियोगिताओं की झलक

हिन्दी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरण

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

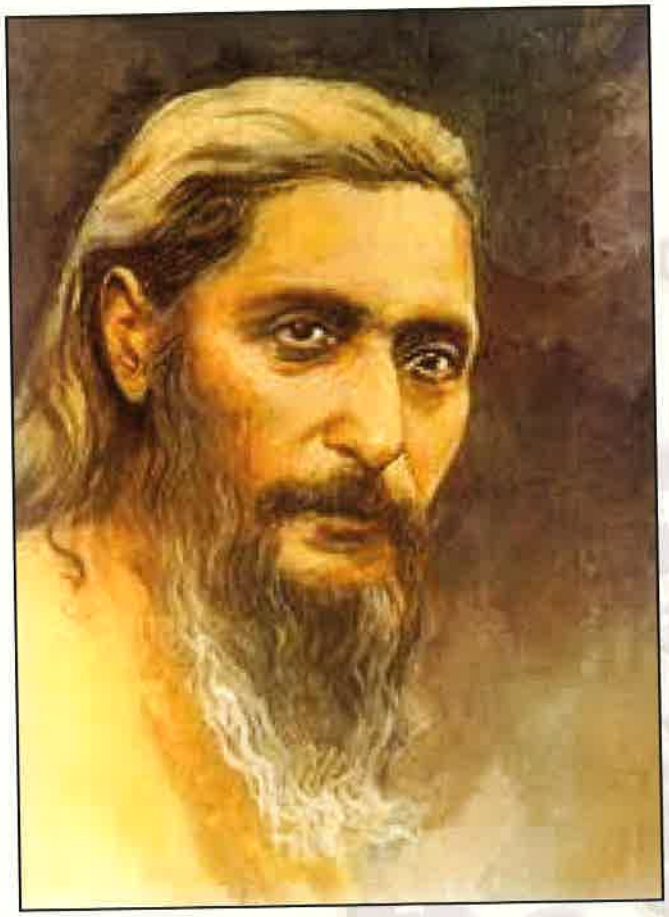

हिंदी साहित्य में स्वच्छन्द, निर्भीक, विद्रोही और क्रांतिकारी तेवर से अपनी विशिष्ट पहचान बनाने वाले पं. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का जन्म बंगाल के मेदिनीपुर जिले की भूतपूर्व रियासत महिषादल में हुआ था। निराला जी ने 1918 से 1922 तक महिषादल राज्य की सेवा की। उसके बाद संपादन, स्वतंत्र लेखन और अुनवाद कार्य किया। इन्होंने 1922 से 1923 के दौरान कोलकाता में प्रकाशित 'समन्वय' का संपादन किया। 1923 के अगस्त में मतवाला के संपादक मंडल में काम किया, इसके बाद लखनऊ में गंगा पुस्तक माला कार्यालय और वहां से निकलने वाली मासिक पत्रिका 'सुधा' में 1935 के मध्य तक संबद्ध रहे। इन्होंने 1942 में मृत्यु पर्यन्त इलाहाबाद में रह कर स्वतंत्र लेखन और अनुवाद कार्य भी किया। वे जयशंकर प्रसाद और महादेवी वर्मा के साथ हिन्दी साहित्य में छायावाद के प्रमुख स्तंभ माने जाते हैं। वे मूलत: कवि थे लेकिन साथ ही उन्होंने कहानियां और रेखाचित्र, उपन्यास और निबंध भी लिखे हैं। हिंदी जगत ने सर्वसम्मति से स्वीकार किया कि वे हिंदी के गौरव हैं। उनके विविध प्रयोगों - छन्द, भाषा, शैली, भाव सम्बन्धी नव्यतर दृष्टियों ने नवीन काव्य को दिशा देने में सर्वाधिक महत्वपूर्ण योगदान दिया।

यद्यपि वे खड़ी बोली के कवि थे, पर ब्रजभाषा में भी कविताएं गढ़ लेते थे। उनकी रचनाओं में कहीं प्रेम की सघनता है, कहीं आध्यात्मिकता तो कहीं विपन्नों के प्रति सहानुभूति व संवेदना, कहीं देश-प्रेम का ज़ज्बा तो कहीं सामाजिक रुढ़ियों का विरोध व कहीं प्रकृति के प्रति झलकता अनुराग। इलाहाबाद में पत्थर तोड़ती महिला पर लिखी उनकी कविता आज भी सामाजिक यथार्थ का एक आईना है।

प्रमुख रचनाएं हैं: तुलसीदास, राम की शक्ति पूजा, सरोज स्मृति, अनामिका, गीतिका, कुकुरमुत्ता, परिमल, नये पत्ते, बेला, अर्चना, आराधना, गीत कुंज, कविश्री, सांध्य काकली, अप्सरा, अलका, निरुपमा, प्रभावती, चोटी की पकड़, काले कारनामे, चतुरी चमार, सुकुल की बीवी, लिली एवं देवी।

आपके पत्र

आपके द्वारा प्रेषित खनिज भारती (अंक सितंबर) के लिए आभारी हूँ। रोचक तथ्य (डॉ. महेश कुमार वर्मा) वास्तव में रोचक लगे, सत्यप्रकाश वर्मा की प्रकृति से सीख ग्रहण करने योग्य है। भारत में स्वर्ण खनन की आवश्यकता (बनबिहारी महतो) तथा ''खनन उद्योग-पर्यावरण हितैषी खनन'' जानकारी से भरपूर ज्ञानवर्धन लेख है। साहित्यकार का परिचय के अंतर्गत सुमित्रा नंदन पंत के उल्लेख के साथ उनकी कितनी ही कविताएं याद आ गईं। राजभाषा संबंधी गतिविधियों के अंतर्गत प्रकाशित सचित्र समाचारों, इस्पात मंत्रालय की विभिन्न इकाइयों में चल रहे हिंदी से जुड़े कार्यक्रमों को जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई व हिन्दी के भविष्य को लेकर आश्वस्त भी । नववर्ष की शुभकामनाओं के साथ सफल संपादन हेतु आपका हार्दिक अभिनंदन ।

क्रांति कनाटे
सदस्य, हिंदी सलाहकार समिति
इस्पात मंत्रालय

राजभाषा को समर्पित आपकी गृह पत्रिका 'खनिज भारती' के सितंबर 2017 के अंक के अवलोकन का सुअवसर प्राप्त हुआ। आवरण पृष्ठ से अंतिम पृष्ठ तक शामिल ज्ञानवर्धक एवं प्रभावी लेखों ने इस पत्रिका को एक विशेष स्थान दिया है । ऐसे तो इस पत्रिका में दिए गए सभी लेख सराहनीय हैं, पर 'संगठन व्यवहार और कार्य संस्कृति' एवं 'खनन उद्योग में पर्यावरण संरक्षण' उल्लेखनीय हैं।

'राजभाषा संबंधी गतिविधियाँ' एवं 'राजभाषा से संबंधित संवैधानिक प्रावधानों के समावेश' से संगठन की राजभाषा के प्रति प्रतिबद्धता प्रतिबिंबित हो रही है।

आशा है, आगे भी इस पत्रिका के माध्यम से आपके संगठन को और नजदीक से देखने का अवसर मिलता रहेगा।

किशोर चंद्र दास
निदेशक (कार्मिक)
राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड, विशाखापट्टणम

पत्रिका के माध्यम से एनएमडीसी लिमिटेड में राजभाषा हिंदी के विविध कार्यकलापों की जानकारी मिली। पत्रिका का कलेवर, साज-सज्जा और रंग आकर्षक है। तकनीकी आलेखों के अलावा राजभाषा के प्रचार-प्रसार की गतिविधियों को भी इस पत्रिका में समुचित स्थान दिया गया है। इसके लिए बधाई स्वीकार करें।

''खनिज भारती'' के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मंडल को मेरी ओर से शुभकामनाएं।

राजीब भट्टाचार्य
प्रबंध निदेशक
फेरो स्क्रैप निगम लि., भिलाई

नव वर्ष के शुभ अवसर पर आपको और आपके माध्यम से एनएमडीसी समूह को हार्दिक शुभकामनाएँ।

राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार को समर्पित आपकी गृह पत्रिका ''खनिज भारती'' का नवीनतम अंक प्राप्त हुआ। आवरण पृष्ठ तथा साज-सज्जा के लिए आपको और संपादकीय टीम को बधाइयाँ।

''जीएसटी मेरी नजर में'', ''सामग्री प्रबंधन में निविदा का स्थान'', ''उद्योग विकास हेतु स्टार्ट अप इंडिया स्टैंड अप इंडिया एक नई प्रगति'' एवं अन्य लेख भी सूचनापरक हैं। विशाल ब्रह्माण्ड से संबंधित ''रोचक तथ्य'', ''प्रकृति से सीख'' ''खनन उद्योग पर्यावरण हितैषी खनन'' ''भारत में स्वर्ण-खनन की आवश्यकता'' द्वारा खनन प्रबंधन पर ध्यानाकर्षण आदि उल्लेखनीय हैं।

इनके अलावा हिंदी साहित्य को महत्व प्रदान करते हुए 'विडंबना', 'भीड़', 'छपते-छपते' तथा 'सुमित्रानंदन पंत' जैसे हिंदी साहित्यकार के रेखा-चित्र भी मनोहर रूप से अंकित हैं। समीचीन मानक तथ्यों से सुशोभित आपकी पत्रिका मन को प्रफुल्लित करती है। सभी लेखकों को साधुवाद।

आशा है, आगे भी आपकी कंपनी पत्रिका के माध्यम से राजभाषायी क्षेत्र में नयी ऊँचाइयाँ स्थापित करते हुए देश सेवा में गरिमामय भूमिका निभाती रहेगी।

ललन कुमार
उप महाप्रबन्धक (राजभाषा)
राष्ट्रीय इस्पात निगम लि., विशाखपट्टणम

आपके पत्र

राजभाषा को समर्पित आपके उद्यम की गृह-पत्रिका खनिज भारती का नवीनतम अंक प्राप्त हुआ। याद से पत्रिका भेजने के लिए धन्यवाद। सबसे पहले उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन के लिए इस्पात मंत्रालय से प्राप्त राजभाषा सम्मान के लिए हार्दिक बधाई। पत्रिका के माध्यम से आपके उद्यम में संपन्न हो रही राजभाषा गतिविधियों की जानकारी मिली। संव्यवहार प्रबंधन संबंधी 'जीएसटी', सामग्री प्रबंधन, संगठन व्यवहार और कार्य-संस्कृति, खनन उद्योग तथा स्वर्ण खनन की आवश्यकता केंद्रित लेख शोधपरक हैं। राजभाषा से संबंधित संवैधानिक प्रावधान उपयोगी है। अन्य सामान्य लेख पठनीय हैं।

पत्रिका के उत्तरोत्तर विकास की शुभकामनाओं सहित,

होमनिधि शर्मा
उप महाप्रबंधक (राजभाषा) एवं
सदस्य सचिव, टॉलिक (उ), हैदराबाद

'खनिज भारती' अंक-सिंतबर 2017 प्राप्त हुआ। सर्वप्रथम, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति उपक्रम द्वारा 'उत्तम पत्रिका पुरस्कार तथा मध्यम कार्यालय वर्ग मे उत्कृष्ट राजभाषा कार्यावन्यन के लिए प्रथम पुरस्कार के रूप में राजभाषा शील्ड प्राप्त करने पर हार्दिक शुभकामनाएं । पूर्ण विश्वास है कि आपके कुशल निर्देशन में राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में 'एनएमडीसी लिमिटेड मुख्यालय' उपलब्धियों तथा सम्मानों के अनेक महत्वपूर्ण आयामों को स्पर्श करेगा।

पत्रिका का मुखपृष्ठ भारत के प्रौद्योगिकी जगत में एनएमडीसी लिमिटेड के अथक परिश्रम और गौरवशाली प्रयासों को दर्शा रहा है। निश्चित रूप से आज पूरे भारतवर्ष को खनिज क्षेत्र में एनएमडीसी के अनुसंधान एवं विकास तथा उपलब्धियों पर गर्व है। श्री संजीव कुमार चौरसिया का आर्थिक जगत संबंधी आलेख 'जीएसटी मेरी नजर में', श्री बनबिहारी महतो का तकनीकी आलेख 'भारत में स्वर्ण खनन की आवश्यकता' तथा सुश्री के. पार्वती श्रीनिवास का समसामयिक आलेख 'स्टार्ट अप इंडिया स्टैंड अप इंडिया एक नई प्रगति' अत्यंत सारगर्भित हैं। श्री एस. के. सनोडिया का विशेष आलेख 'कामयाबी कैसे चूमे कदम' प्रेरणात्मक एवं संग्रहणीय है। आशा है कि 'खनिज भारती' के अगले अंक में उनसे किसी महत्वपूर्ण विषय पर इसी प्रकार का एक और आलेख पढ़ने को मिलेगा।

शुभकामनाओं के साथ

डॉ. राजनारायण अवस्थी
हिन्दी अधिकारी एवं संपादक, ईसीआईएल गौरव,
हैदराबाद

एनएमडीसी लिमिटेड मुख्यालय, हैदराबाद की राजभाषा को समर्पित गृह पत्रिका 'खनिज भारती' सितंबर 2017 की प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख विषय वैविध्यता को समेटे हुए हैं। आपके संगठन की गतिविधियों का रुपायन भी सूचनात्मक श्रृंखला में एक कड़ी जोड़ता है। 'पन्त' का पावन प्रतिपाद्य साहित्यिक स्मृतियों को स्पंदित करता है। पत्रिका की समग्र प्रस्तुति अभिराम तो है ही, राजभाषा निष्ठा को भी बल प्रदान करने में सहायक है।

शुभेक्षा सहित,

आर.डी. शुक्ल
उप निदेशक (रा.भा.)
केन्द्रीम रेशम बोर्ड, बैंगलूर

एनएमडीसी लिमिटेड, मुख्यालय, हैदराबाद की राजभाषा को समर्पित गृह-पत्रिका 'खनिज भारती' का सितंबर 2017 अंक मिला। बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री संजीव कुमार चौरसिया का 'जीएसटी मेरी नजर में' श्री यशवंत देवांगन की कविता-'विडम्बना', डॉ. महेश कुमार वर्मा का 'रोचक तथ्य', श्री असद उल्लाह खान का 'सामग्री प्रबंधन में निविदा का स्थान', श्री सत्यप्रकाश वर्मा का 'प्रकृति से सीख', श्री विनोद कुमार पाण्डेय का 'संगठन व्यवहार और कार्य संस्कृति' आलेख काफी ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणा दायक हैं। सभी रचनाकारों को बधाई.

एनएमडीसी लिमिटेड के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की कलम से निकली राजभाषा रूपी गंगा की धारा संपूर्ण एनएमडीसी में सरल, सहज, सुबोध भाषा-शैली मे अविरल प्रवाहित हो रही है।

छगन लाल नागवंशी
राजभाषा अधिकारी
फेरा स्क्रैप निगम लिमिटेड, भिलाई

अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन

एन एम डी सी लिमिटेड
(भारत सरकार का उद्यम)

NMDC LIMITED
(A Govt. of India Enterprise)

खनिज भवन, 10-3-311/ए, कैसल हिल्स,
मासाब टैंक, हैदराबाद-500 028. तेलंगाना, भारत,
फोन: 040-23538756, फैस: +91-40-23538711